मनोजमंजरी ।

चतुर्थ कलिका ।

अर्थात्

नखसिख के अपूर्व कवित्तों का संग्रह ।

डुमरांवँ निवासी नकछेदी तिवारी उपनाम
अजान कवि द्वारा संग्रहीत ।

यह पुस्तक बनारस भारतजीवन प्रेस में मिलेगी ।

॥ काशी ॥

भारतजीवन यन्त्रालय में मुद्रित हुई ।

१८८६ ईस्वी ।

पहली बार १०००] [मूल्य ।)

मनोजमञ्जरी ।

मंगलाचरण सवैया ।

छहरैं सिर पै छवि मोरपखा उनकी नथ के मुकुता थहरैं । फहरैं पियरो पट बेनी इतै उनकी चुनरी के झबा झहरैं ॥ रस रंग भिरे अभिरे हैं तमाल दोऊ रस ख्याल चहैं लहरैं । नित ऐसे सनेह सों राधिकाश्याम हमारे हिये में सदा ठहरैं ॥ १ ॥

चरण वर्णन—कवित्त ।

काम के तुनीर बिबि पल्लव पटीर कैधों बिद्रुम के पीठ पर बारिज बरन हैं । जानु जुग नाल फूले सुन्दर सरोज दोऊ अतिही सुदेश महा मन के हरन हैं । उन्नत अंगूठा नख आभा अंगुरीन पर चन्द्रकला आई कैधों राहु के डरन हैं । हौंहूं हेर हारी रीझे रसिकबिहारी हंस-गति अनुसारी कैधौं प्यारी के चरन हैं । २ ।

प्यारी के पगन पाई एती अरुनाई जामें मुगध बधू
दिन सांझ करि भाख्यो है । बाग है जरत लाके
सतान हूं के किसलय तारिबे को म-
चिन्तामनि आये जाके चांदनी बिछौना

मल को बिछौना जनु भाख्यो है। चरन धरत जाके आंगन फटिक चन्द मानों लाल बिद्रुम दलान बांधि राख्यो है॥ ३॥

कोमल अमलता की रंग भूमि कैधौं यह सोभियत आंगन कै सोभा के सदन को। अरुन दलनि पर कीनो कै तरनि कोप जीत्यो कैधौं रजोगुन राजिव के गन को॥ पल पल प्रनय करत कैधौं केलीदास लागि रह्यो पूरबानुराग पिय मन को। एरी वृषभान की दुलारी तेरे पाय सोहैं जावक को रंग कै सोहाग सौतिजन को॥ ४॥

बिम्ब में प्रवाल में न ईंगुर गुलाल में न चंपक रसाल में न नैसुक निहारे में। दाड़िम प्रसून में न सून धरा तून में न इन्द्र की बधून में न गुंजा अधिकारे में॥ कुसुम सुरंग में न किसुक सुरंग मे न जावक मजीठ कंज पुंज वारि हारे में। राधा जू तिहारे पग अरुन समान ताको हेरि हारे कबिता न आवत हमारे में॥ ५॥

सवैया।

टेव गलीचा मोलायम ऊपर सूजनी चिक्कन चारु बिछावन। तापर पुंज पर्‍यो परसून को घूठनलौं गरकाप सोहावन॥ श्रीवृषभानकुमारि महा सुकुमारि चलै इस आवन। [illegible] डरै उमड़ै औ धड़ै कि गड़ै ना गुलाब की पांखुरी पावन॥ ६॥

पादांगुली बर्णन—कवित्त ।

अरुन कमल पग पांखुरी की पांति लसै सरस सघन सोभा मन के हरन की। दीरघ न लघुताई पातरी सो-भावती है देखे दुति होत जात बिद्रुम बरन की ॥ नख की निकाई नीकी आरसी सी सोहति है जामे देखी जाति सोभा सौति के मरन की । भरमी सुकबि कहि आवति न मेरी मति पांगुरी भई है लखि आंगुरी चरन की ॥ ७ ॥

पद नख ।

गुरुजन हूं में राधि एक तक ताक करि प्रेम परिपाक के न कबहू डगी रहै । 'गुरुदत्त' भूपर उदोत जग मग जोति कबिता चकोरन की ओरन जगी रहै ॥ भूलि सुधि पलकी अनूप अंशुजालन मै रूपही के लालच मैं पुलक पगी रहै । तेरे पदनख शशिमण्डल मे बंक छबि सांवरे की नजर कलंक सी लगी रहै ॥ ८ ॥

बिछिया बर्णन ।

गोरी गोरी आंगुरीन ऊपर अनूप छबि देखिये दिनेस दुति तनक तनक की। बीच बीच बीजन के उठे हैं बलूला कैधों रूप की नदी में रुचि राजति बनक की ॥ मोहनी सी सबै मनमोहन के मोहिबे को सूधे चितए तें सुधि

रहै ना सनक की । करत कलोलैं जब लाला संग डोलैं यह झनक मनक बोलैं बिछिया कनक की ॥ ९ ॥

सवैया ।

चंपकली दलहू तें भली पद अंगुली बालकी रूप रसे हैं। सोभ सुदेस लसैं नख यों जनु पीतम के दृग देव बसे हैं॥ बांक अनौट बनी बिछियानि बिभूषित जोति जराय गसे हैं। केसव सोम सरोजन ऊपर कांपि मनो तन त्रान कसे हैं॥ १० ॥

गुल्फ बर्णन कवित्त ।

चरन कमल करि हाटक की सोभा देत पूरी मनि मानो लट नागिनी उलफ की । रंभातरु उलट कपूर पूर राखिवे की कोठी सी जुगल कम कामके कुलफ की ॥ साजत सुदेश गांठ गिरी है दिनेस कैधौं रेसम रसे की रूप भूप के सुलफ की। एड़िन सों भाड़ राजै पायन दुहूं बिराजै अति छबि छाजै लाल गोरी के गुलफ की ॥११॥

जेहरि बर्णन ।

कैधौं रति पति रची गति गजराज पै ये हेम की अँ-वारी समाधान सो बिचारि कै। कैधौं तनमंदिर में आभा चढ़िवे की सीढ़ी कीनी काम कारीगर कंचन सुढ़ारि कै॥ सूरति बनी है तेरे पगमे झमक सोभा कहां लौं बखानौं कहि जात ना उचारि कै। जेहरि सकल जगमोहन कहा-वत हैं तेहरि तो रीझे हेरी जेहरि निहार कै ॥ १२ ॥

कैधौं रति रानी उर हार पीत फूलन को कैधों कदली कै अंग कंचन की बेलि है। कैधौं कमला के गेह बांधी अति सोभित है पीतमति तोरन उठत छवि रेल है॥ सूरति सुकवि छवि कहा लौं बखानौं नेक देखत हियेरी मन सबको सकेल है। तेरे पाय पर ये न पायजेब आली कैधौं गति गजराज गरै हेम की हमेल है॥१३॥

जंघ वर्णन।

कोमल अमलमुखी तेरे ये जुगल जानु मेरे बलबीर जू के मनको हरत हैं। सौरभ सुहाय सुभरंभा को सदन अरु केसव करभहू की सोभा निदरत हैं॥ कोटि रतिराज सिरताज ब्रजराज को सौं देखि २ गजराज लाजनि मरत हैं। मोच २ मद रुचि सकल सकोच सोच सुधि आए सुंडन की कुंडली करत हैं॥ १४॥

मोहन के मन अवलंब यह आली लखि चित्र में लिखे न जात चकित चितेरे हैं। कंचन के खंभन के दंभ दूर करिवे को कीने करतार ऐसे कहूं काहुं हेरे हैं॥ रूपही की ढूंढुरी है पींडुरी दिनेस जामें लघु न बिसाल लाल चाहि भए चेरे हैं। सूख गई सौति सब सोचन सकोचन तें सोच मदमोचन जुगल जानु तेरे हैं॥ १५॥

रतिहू की मति पतिहू की ललचात अति मैनहू के नैन देखि लालच भरति है। सुन्दर सरस रस सुभ सौरभ

सहज सोहै करकस जानि करी कर निदरति है। सुभित सुभग कोऊ चोप घनकार तेरे जघन जुगल मनि काठ की हरति है। भाय के उतारी कैधों सोभा साँचे ढारी छबि कनक के कदली की बदली परति है॥ १६॥

रूप रस आसन के काम के सिंघासन हैं केलिकला कौतुक की जीत मन आनिये॥ सौतिन को गरब गयो है देखि २ जिन्हे कदली के खंभ दोऊ उलटे प्रमानिये॥ भरमी सुकबि गज सुंड सकुचन लागी सौगुनी करभहू तें सोभा सरसानिये। सुघर सुढार ये संवारी हैं बिरंचि कैधों जंघ अलबेली के अनूप जुग जानिये॥ १७॥

नितम्ब वर्णन।

अंगनि में कैधों जंघ अजन्न अनंग रचे गांठ कुचगिर छित हेत मद चालके। कटि रथ चक्र की अकृति में सु पाइयत केलि कला बैठक ये रसिक रसाल के॥ बिपरीत मंडित जघन खंभ निम्ब कैधों लाह को गिरद गादी मैन महिपाल के। अमृत सों सानी कैधों सोने की सरस पिंडी सोहत हैं सुन्दर सुभग श्रोनी बाल के॥ १८॥

लाले रंगवारे घेरवारे घाघरे सों घिरे नेक न उघारे भारे सुखमा चमूलहै। जगजीत वारे पति प्रीति रीति वारे कैधों काम के नगारे उलटारे झपे झूल हैं। उपमा

अतूल पाय छांड़ि मति भूल बैन मनसा कहे तें करै कबिन कबूल हैं। निरखे नितम्ब मीके वा नितम्बिनी के मानो जंघ जुग कदली के थंभ थूल मूल हैं ॥ १८ ॥

चहूंओर चित चोर चाक चक्र चक्रमनि सुन्दर सुदरसन दरसन हीने हैं। दति सुख सुखनि घटायवेको सुख रूख सुरनि बढ़ायवेको केसव प्रवीने हैं। सबही के मननि हरनि करि हरिहू के मन मथिवे को मनमथ हाथ लीने हैं। रुचि सुचि सकुचि सकेलि कै तरुनि तेरे काहू नए चतुर नितम्ब चक्र कीने हैं ॥ २० ॥

कटि वर्णन।

तारसो तपासो बार लीक सो लुकंजन सो जादू कैसो छंद कहिबे में छलियत है। चितै ना परत चौंकि जात है चितौन जहां नैनन को गति को गुमान दलियत है ॥ पगन धरत धरकत हियो बलभद्र डगन धरत डग डग हलियत है। कुच कुचंभार चीर हीरन के भारी भार ऐसे खीने लौंक पै निसांक चलियत है ॥ २१ ॥

सुमन में बास जैसे सुमन में आवे कैसे नाहीं काहू होत नाहीं हां कहे चहत है। सुरसरि सूर जामें सरस्वति सोहै जैसे वेद के बचन बांचे सांचे उचरत है ॥ परिवा के इन्दु की कला ज्यों बसे अम्बरमें परवाको अच्छ परतच्छ ना लहत है। जैसे अनुमान के प्रमान पर ब्रह्म जैसे कामिनी कटि कवि मीरन कहत है ॥ २२ ॥

कोउ कहै बार ही सेवार सी कहत कोउ कोउ कं-अतार सी बतावत निसंक है। मेरे जान सिरिफ लोनाई की लपेट लागी ताही की लहम भी लचक होत वंक है। तोखनिधि जो पै बेधधार को वहम वाढ़े तो पै परतच्छ को प्रमान कौन रंक है। जैसे भूमि अंबर के मध्य में न खंभ कोउ तैसे लोललोचनी के अंक में न लंक है॥ २३॥

दोहा।

सुनियत कटि सुच्छम निपट निकट न देखत नैन।
देह भये यों जानिये ज्यों रसना में बैन॥ २४॥
सुच्छम कटि वा बाल की कहौं कवन परकार।
जाके ओर चितौतहीं परत दृगन में बार॥ २५॥

किंकिणी वर्णन—कवित्त।

कैधों क्षुद्र घंटिका रतन की ललित संभु राजत झ-लझलात राधिका के धर पर। घाघरी मढ़ी के पर किं-किनी कनक की कलस तर लसै कैधों रूप रूप घर पर॥ चलत हलत कैधों पौन ते झुलत तातें बोल २ उचिती हैं आय आप घर पर। पींजरे जराउ टगीं बुलबुल जाल मानो झरलाय राखी है निकट नाभी सर पर॥ २५॥

रागन की मंडली रची है कामदेव कैधों रागिनी समेत रचना है चित चोरी की। कैधों नाभी कूप पै र-

छूट भरी रूप भरी ठरी मनहरी है बिचित्र भांति भोरी की ॥ कैधौं है दिमेस मनिवेस कोऊ मोहनी को मोहन को मोहै मन बैस धुनि थोरी की । कैधौं बर बाजत बिराजत नितम्ब ढिग छाजति छबीली छुद्रघंटिका किसोरी की ॥ २६ ॥

नाभि वर्णन ।

सुख की नदी में कैधौं परत गंभीर भौंर धरा को तखत पिय लोचन मरथ की । कैधौं बरखा में रोम राजी रहै पन्नग की कैधौं खानि खुली है जवाहिर के गथ की ॥ घासीराम कैधौं सौति सुखन की भाकसीसी मान मई खिरकी उरज गढ़ पथ की । एरी मेरी बीर तेरी नाभी रसभरी कैधौं दोत करता की कै मथानी मनमथ की ॥२७॥

राजत गंभीर रोमराजी बन तीर मन तीर पहुंचे तें भूले त्रिबली छबर मे । भूर भौर भारी छबि छलक सिंगार पानी कालिदास देखत भंवर कौन भरमें ॥ जबी नेकही में डूबि गई लरिकाई तामे रही ये उपाय सखी बाहिर नगर में । चंचल गोपाल खेलै गोकुल की गली बीच बड़ी करवर तेरे नाभी सरवर में ॥ २८ ॥

रोमराजी वर्णन ।

कैधौं यह पान पै बसीकर को मंत्र लिख्यो देखि छबि मोहै कोऊ बिया पंचसर को । हृदय सरोवर सिंगार

जल भयो कैधों उमड़ि चल्यो है नाभि कुण्डिका गह्वर की। छोटे २ आखरन अवला लिखाए एतो आपनी सवल-ताई सूरत समर की। जिन्हें देखे नैनन की गति मति भाजी यह तेरी रोमराजी कैधों बाजी बाजीगर की ॥२९॥

जोवन सरोवर में अलक झलका कैधों नेह नववेली नाभि कूपतें विराजी है। खंजन नयन छवि बांधिवे की बही कैधों राजत सुदेस सहावारी छवि छाजी है॥ उदर अभूत निकसत स्याम सूत भृङ्ग सहा अभिराम काम कीनी किधों बाजी है। राखी अवरेख हिये मोहनी दिनेस देखि रोम २ राजी तातें नाम रोमराजी है॥३०॥

त्रिवली वर्णन।

कैधों मैन भूपति के रथ के सुचक्र चले तिनहीं की लीकें उर भूपे जान तौन है। कैधों मन ठग की ये गली है भली ठगवे की कैधों रूप नदी है तिधारा किधौं गौन है॥ ऐसी छवि देखि एरी मोहि मनमोहन जू तातें मैंहूं जानों येई मोहिवे को भौन है। एक बली सबही को बस करि राखत है त्रिबली जो करे बस अचरज कोन है॥३१॥

अमल अनंग के अनन्द की उदित भूमि जीति पिय बाजी दगा बाजी सी पसारी है। कनक के पान से उदर में उदित दुति त्रिबली तिहारी में तिहारी मति हारी है॥ रूप गुन चातुरी सों सुरनर नागिन को जीते

मनि कंठ विधि सोहै रेखसारी है। सौतिं सुख उतरै को पिय प्रेम चढ़िबे को कुन्दन की प्यारी पैरकारी सी संवारी है॥ ३२॥

उदर वर्णन।

कोमल अमल दल कमल नवल कैधौं कीनी है बिरंचि मन छवि की सपेट है। उदित प्रकार की दुति आन छाई कैधौं चमकत चारु खात लोचन रपेट है॥ सुन्दर थली है भली मदन बिराजिबे की जाकी सम कीने होत उपमा तरेट है। चीकने परम मखमल तें नरम ऐसो प्यारो जूको पेट लेत मनको लपेट है॥ ३३॥

कोमल बिमल काम भूप की सुरंग भूमि पान की सी दल चल दल कोसो पात है। मोहन के मन की मनोरथ की मोहनी कै सौति कै सताइबे को सोभा सरसात है॥ नाभि रस कूप की सुघाट मिलि सीढ़ी डाली टरत न दीठ नीठ २ दरसात है। भरमी सुकवि रोम राजी की बिराजी छवि उदर अनूप ऐसो सुभग सोहात है॥ ३४॥

कुच वर्णन।

कैधौं रतिजंग के सुभट जुगराज सोहैं कंचुकी सुरंग कसे उन्नत प्रमाने हैं। दृग कमनैत के कटाच्छ सर छाड़िबे को मानो ये बिरंचि रचे रुचिर निसाने हैं॥ कैधौं

है कालिन्दी कूल कोक सुभ सोभ कीधौं उरज उतंग लखि कान्ह मन माने हैं। जोबन महीप अंग आगम सुगम जानि मदन फरास कैधौं तंबू जुग ताने हैं ॥ ३५ ॥

मंगल कलस भरे मकरन्द बलिभद्र कैधौं सम दुन्दुभी सहोदर समर के । कैधौं रहे संकि सुरसुता के सरन सोचि चकवा के सावक मताए ससि कर के ॥ मैन के मवास मन मोहिबे को मोदक की श्रीफल विमल हैं कि फल सोभा तरु के । चोपे बिन कामिनी पयोधर की आवै ओप ऐपन सो मांड़े आछे पिय धोरहर के ॥३६।

कैसे रतिरानी के सिंधोरा कवि श्रीपति जू जैसे कलधौत के सरोरुह सवारे हैं । कैसे कलधौत के सरोरुह संवारे कहि जैसे रूप नट के बटा से छवि धारे हैं ॥ कैसे रूप नट के बटा से छवि धारे कहि जैसे काम भूपति के उलटे नगारे हैं। कैसे काम भूपति के उलटे नगारे भारे जैसे प्रानप्यारी ऊंचे उरज तिहारे हैं ॥३७॥

कुण्डलिया ।

कैधौं कुच कंदुक किधौं कुम्भ कलस कमनीय। काम कंज कूजे किधौं कोक सोक समनीय ॥ कोक सोक समनीय छीर सुख श्रीफल कैसे। संपुट संभु सुमेरु हेम गुम्बज गोले से। औंधे ताल अछिद्र धरे विवि दुन्दुभि ऐधौं। बरनै कवि रसरंग धौरहर माधो कैधौं। ३८ ॥

चलै न चक बक धुनि को लखि उर उरज उतान । ताजगंज मीनार को कीनो पस्त गुमान । कीनो पस्त गुमान आन को कौन चलावै । सैल शृङ्ग उतंग ढंग ह्वै कै रहि जावै ॥ चुरे खंभ आकास सहारे कै द्वै अचले । ऊंचे निरखि उरोजन अचले मुनि मन मचले । ३९ ।

कुच लालिमा वर्णन ।

सरद के घनमें ज्यों अरुन उदोत दुति सतोगुन माझ रूप राजस के छल कै । फटिक पखान में सन्ध्या सी झलक रही सुरसरि माह सोभा सारद के जल कै ॥ झीनी सेत कंचुकी में अरुन उरोज आभा जाहि देखि भूखी मन लालन को ललकै । कैधौं हास अम्बर अनूप अनुराग राजै कैधौं सेत सारी में कुसुंभ रंग झलकै । ४० ।

कैधौं उदयाचल उदोत राका जोबन को अस्ता अस्त कैधौं सिसुताई भानुगति है । अंतर को राग किधौं बाहर प्रगट भयो कैधौं मुख राग की झलक झलकति है । कैधौं चंद बंदन की बंदन गयन्द कुंभ कैधौं उभै भाल राजै सिवकी सकति है । कैधौं बलभद्र जामी मूरि है सजीवन की ऐसी कुच अग्रता की लालिमा लसति है ।४१।

कुच स्यामता वर्णन ।

संकर के मुख में हलाहल की डरी मानो करि कुंभ मधु हेत भौंर लपटानो है । सोने के बटा में स्याम मनि

की जरी है मानो जोवन नृपज पै सिंगार कैसो थानो है। नील कौल पांखुरी को रंचक सुभग भाग मुख चक-वान के सनेह करि भानो है। तेरे कुच अग्र ऐसी स्यामता लसति नीकी सिखर सुमेरु पवमन को निसानो है॥४२॥

अवलंब अलिन मलिनहीं के कोरिका की अनी कुंभ ऊपर अनंग छाप दीनी है। कैधों सितकंठ कंठ राजति गरल दुति कनक गिरिन मनि मंजरी नवीनी है॥ सि-सुता की तनुता तमक तन धरि मन तामस की रीति तें तरुनि तेज कीनी है। स्यामा के अनूप कुच अग्रन की स्यामताई कैधों बलभद्र रसराज छबि छीनी है॥ ४३॥

कैधों हेम सैल शृंग जुग पै सिमिटि रजि घन की घटा पाय पटली सुरोज की। कैधों पोखराज के सोहाग के सिंधोरे नग नीलम जटित सोभा अति चितचोज की॥ श्रीकबि धों मंजुल मलिन्द मत्त सोए आन पलिका बि-छाय मृदु कलिका सरोज की। सौरभ दृगी के उच्च कुच पै चुचुक कैधों कैधों सुधाकुम्भ मुख मोहर मनोज की॥४४॥

कैधों गिरिराज के सोहाये बिबिशृंग कैधों सुधा के कलस भरे कंचन के रंग के। कैधों संभुराज फूले श्रीफल ललित कैधों ऐंठे मद गलित बिपाही रति अंग के॥ कैधों प्यारी कुचन पै स्यामता लसत कैधों मरकत मनिके कलस ऊंचे रंग के। कैधों कंज मंजु पै मधुप आय बैठे कैधों सर भार गड़े भटू खटू हैं अनंग के॥ ४५॥

कंचुकीयुत कुच वर्णन।

कैधौं सिसुताई के पयाने सामिग्राने ताने सुन्दर सु-
धार पट कुटिका है लाज की। कोकसाला रूप की कि
काम ही की सुखसाला बलभद्र कोमल कुलह बाज
काम की। मोहनी की डारी है अंध्यारी मनमथ मानो
ऐसिही बिराजैं धौं जोबन गजराज की। गोरे २ गोल
कुच तेरे नील कंचुकी में पहिरे सिलह रति रन के स-
माज की ॥ ४६ ॥

कोऊ कहै लालन तें कंचुकी में कुच मूंदे कोऊ कहै
बांधि राखे बहा है मलय के। कोऊ कहै कुंभिन के कुंभ
पै अंध्यारी डारी संभुराज भारी जे अवधि हैं बलय के॥
कंचन के संपुटन मूंदे हर कहै कोऊ पहिरे सिलाह कैधौं
भट हैं दलय के। जैसे शिव तीजो भाल नैन राख्यो मेरे
जान तैसे काम मूंदे बिबि लोचन प्रलय के ॥ ४७ ॥

आई जल केलि कै नवेली रति रंग भरी अंग २
भूखन अनंग रंग रस तें। कहत किसोर मुख धोय पोंछि
आंचर सों ठाढ़ी भई तीर पै छबीली उर जस तें। भुज
उलटाय कै कँधा पर है आंगीबंद गहि रहि गई देखि
लाल लाज बस तें। सनमुख सबल बिलोकि रनधीर
मानो खैंचत सुभट बीर तीर तरकस तें। ४८ ।

प्यारी सुकुमारी ताके उरज बढ़त जावैं सुख सरसावैं सुकुमार अवअग्ता के। कंचुकी कसत तैसी सुखमा बसत तातें कहै कवि तोष घनस्याम मनरत्ता के। नीके हैं वरोज बड़े दाहक सरोरू तन प्रतिही कठोर हैं बंधैया काम कत्ता के। निसुता गनीम के निकारिबे के काज आए टोपीदार एलची सुजोवन चकत्ता के। ४९।

सिसकत सांसे भरे बीधे बांह पासे भरे रस भरे र-सिक रसीली चित चोज की। कहै पद्माकर सु ढीठ बिपरीत मांह महमही मौजे मंजु मंजुल मनोज की॥ रंग रस भीनो भीनी कंचुकी सबुज फोरि निकरि लसी है प्रभी जुगल उरोज की। मानों रूप सागर में उवत अनोखी स्वच्छ धाई कढ़ि आई फोरि कलिका सरोज की॥

दोहा।

नील कंचुकी में लसत यों तिय कुच की छांह।
मानो केसर रँग भरे मरकत सीसी मांह॥ ५१॥
बिधुबदनी तुव कुचन की पाय कनक सी जोति।
रँगी सुरंगी कंचुकी नारंगी सी होति॥ ५२॥
जाली अंगिया बीच यों चमक कुचन की होति।
झिझिया के तुब्बन लसे ज्यों दीपक की जोति॥५३॥

भुज वर्णन—कवित्त।

केसोदास गोरे गोरे गोल काम मूल हर भामिनी के भुज मूख भाव से उतारे हैं। सोभा सुख बरसत माखन

से परसत दरसत कंचन से कठिन सुधारे हैं । ललचव-लित बाहु देखि रीझे हरि ताइ मानो मन पाखिवे को पासी यों बिचारे हैं। मलिन मृनाल सुख पंक में दुराए दुख देखो जाय कातिन में छेद करि डारे हैं। ५४ ॥

तन तरुवर की उभय साखा ललितभद्र सुन्दर सुढार अति गोल समतूल हैं। सांचे भरि ढारे बिधि दामिनी के दोउ टूक दमकत दुति नाहीं दुरत दुकूल हैं ॥ सुख के सरोवर के पोखे हैं मृनाल मानो फूले कर अग्र कोकनद कैसे फूल हैं। काम कुन्द हेरे भाय कुन्दन कनक दंड कैधों भोरी भामिनी के गोरे भुजमूल हैं ॥ ५५ ॥

कर वर्णन ।

पावे जो परस ताको होत है सरस भाग पावन द-रस जाको जानो भमुसार है। रमनीय लेखन की लीला धर पेखन को ललित सुरेखन की प्रगटी पसार है। बहि क्रम बूढ़ी करि चिन्ता चित गूढ़ी करि रचनाऊँ ढूंढ़ी विधि बिबिध बिचार है । कथन कथेरी लोक चौदहो मथेरी पर तेरी या हथेरी की न पाई अनुहार है ॥ ५६ ॥

नूतन के नूतन सरस सुकुमार पात जात हैं लजात जे वे निपट उपर के । को सम की को सम कारत किस लय कहा होत ना बराबरी नवीन पात वर के ॥ कहै संभुराज दूजो सम को न देख्यो और पेखि२ रेखा

सुललित प्यारी कर के । जावक सरस विधि पारसी ह-रफ लिखे कंज के दलन में प्रबंध पंचसर को ॥ ५७ ॥

लाल करतल कर गहि के नवेली के सु टेहलति सहेली कोऊ परम सयानी है । कालिदास कौन सकै सुजस ब-खानि कर इन्दिरा की खानि सुतो हम पहचानी है ॥ पति को न गेह लिख्यो स्याम सो सनेह सुनि सखी के बचन बिधुमुखी मुसुकानी है । एरी ठकुराइन सुतेरी या हथेरी बीच सौति चेरी लिखी सब रेखन तें जानी है ॥

देखि अन देखे हरि तजत न अंक तेरो बिमल मयंक-मुखी मोहै कोटि नित्रलों । कालिदास रीभ २ करत सराह प्यारो क्यों न यह छबि लागे बैरिन को बिख लौं। लाल कुरबिन्द अरबिन्द इन्द्रबधू वारों बिद्रुम ललाई नीचे करि राखी इख लौं । तेरे करनख की बनक को बिलोकि उठै सौतिन को मनख की आग नख सिख लौं॥

ओज करि आपनो पयोज पृथिवी पै रोज रोज ही सरोजन को ओज हरिबो करै । बारि निधि बसि के क-पाली सीस लसि के प्रदखिना सुमेर आस पास भरिबो करै । छोटो २ ह्वै कै बढ़ै षोड़स कला लौं फेरि नीके बुन्द अमल अमीके झरिबो करै । वृन्दाबन चन्द नख चन्द समता के हेत मन्द यह चन्द कोटि छन्द करिबो करै ॥

पीठ वर्णन ।

कैधौं यह बेस भेस रस को नरेस वाके देस की सु-देस भूमि सोभा रस भीनी है । कैधौं यह मदन की पाटी मंत्र पढ़िबे को सूरति सुकवि बनी फाटक नवीनी है ॥ जोबन के मन्दिर की भीति है सुढार कैधौं राज रति राज रुचि सो बनाय कीनी है । एरी बीर तेरी यह पीठ नेक दीठ परी देखतहीं ईठ सबही को पीठ दीनी है ॥ ६१ ॥

जोबन महीपति के सेवक मदन तोहि तिय तन ब-सिबे को जगह बनाई है । चिन्तामनि जानत सो नन्द के कुमार जातें भई अंग अंग में अनंग की दोहाई है ॥ रूप की सँवारी चारु राधिका की पीठ पत्र तातें बेनी बर बरनावली लिखाई है । दुहूं ओर वाके ढिग पारस रहत तातें मेरे जान सोने की सोहाई दरसाई है ॥६२॥

सांचे तें निकारी भरि प्यारी की ललित पीठ नीठ विध ईठ की सुधार कर गढ़ी है । कैधौं तोख पुरट की पाटी है अनूप जामें परम प्रबीनताई पंचबान पढ़ी है ॥ तैसी छबि बरनी न जात मुख करनी के हरनी नयन पर जेती छबि बढ़ी है । तैसी सुख देनी बेनी भली है बली सनेह मानो नाग लसी कदली के दल चढ़ी है॥६३॥

दोहा ।

इक तरु दुइ दल होत हैं यह अचरज की बात ।
दुइ तरु कदली अंघ में पीठ एकही पात ॥ ६४ ॥

ओरि रूप सुबरन रची बिधि रचि पचि तुव पीठ ।
कीन्हीं रखवारी तहां बेनी व्याली दीठ । ६५ ॥
नहीं पनारी पीठ तुव कीन्ही दीठ बिचार ।
धसक गई यह भारतें बेनी के सुकुमार । ६६ ॥

ग्रीवा वर्णन ।

सुख को सदन देखि मदन मुदित जात बारिज बरन सुभनाल सो बिसेखिये । चारो रीति नवो रस हाव भाव की प्रतीत छबिसों लपेटि हेम पिंडी कै उरेखिये । कैधौं मनि कंठ तीन लोक की तरुनि जीत दुति तेही भांति २ तीनों रेख लेखिये । कनक के कंबु कमनीय ताके भव्य भेटे आनद की सींव कै अमोल ग्रीव देखिये । ६७ ।

सुंदर सुडोल आछी भांति सों सुधारि करी हरिकर कंबु सोभा वारि फेरि डारिये । कोकिल औ पारावत करि न सकत सरि जग में न और उपमान सो बिचारिये ॥ सोभा कोसी सींव नूर कहि बरनत भेव राती दिन पीतम रहत चित धारिये । जाके कंठ मध्य पीक दुति ऐसी सो हियत जैसे सीसी माह रंग जावक को ढारिये । ६८ ॥

तेरे मुख गावत गुपाल जू के गुन गन सारदाहू हर-ति है उर में उरेखिये। जिनके वे मंडन फटिक मालहार हास हिये परतेई वे सिंगार करि लेखिये । तेरे मेक बोल सातो सुर को सोहाग कोक मीठे राग सुनि रीझर

करि लेखिये। तोहि डारी तीनौं ताति मेरे आनबीन की तें प्यारी तेरे गरमै वे तीनों रेख रेखिये। ६९।

सुरनर प्राकृत कवित्त रीत चारभटी सात्विकी सुभारती की भारती यौं भोरी की। कैधौं बैसो हास कलगानता सुजानता निसंकता सौं बचन विचित्रता की ठोरी की। बीना बेनु पिक सुर सोभाकी निरेख बचि मन बच क्रमन कि पिय मन चोरी की। चच्छुसाई कीसौं मोहै चक्षिकाज देखि २ चच्छुन नयन कंजु पीव गोल गोरी की। ७०।

सवैया।

किधौं रूप सरोवर में तें कढ्यौ लसै कंबु भयौ सुर सात को है। किधौं सांवरे जू गुन रावरे के या कपोत फंद्यौ बड़ी जात को है। सुमिरेस जू कैधौं सुकोकिला को सुर साधि रच्यौ बिधि हात को है। बर कंठ में गोरी कि कंठा लसै सु कतारन तारन कांत को है। ७१।

चिबुक बर्णन।

कनक बरन कोकनद के बरन चौर झलकत झाईं तामे बसन रदन की। कीनी चतुरानन चतुर ऐसी रचि पचि चलप सी चौकी चारु आसन मदन की। अंगुल से बान उपमान की अवधि सब सुमिल सुपान मानो पिय के सदन की। सुन्दर सुठार है चिबुक नव नायिका की मानो बलभद्र बादसाही है बदन की। ७२॥

कैधौं अरबिन्द मकरन्द रस पान माते ढिग अलि-पार रहै कैधौं अरसाय कै । कैधौं पिय प्रेम को पिजाय भरी नारंगी में बैंदी स्याम सुमन निसानै सी बनाय कै॥ कैधौं है सिंगार रस मगन मनोज मन लालच ललक मनि कंठ लाग्यो आय कै । सौतिन के बिरह सोहाग सोहै गोदना के लेत चित चाह तेरो चिबुक चोराय कै ॥

चिबुक तिल वर्णन ।

कंचन के खाने में जटित नीलमनि कैधौं संपुट में सुच्छद सरूप स्याम लोना है। सुमुख सुखेत रस बीज बोई छोना कैधौं केलि समै काम जू को खुलत खिलौना है ॥ राम कहै तिय मन मोहन के मोहिबे को कठिन कुह में पढ़ि राख्यो ठीक टोना है। कमल कली पै अलि बैठ्यो अलि छौना किधौं कामिनी तिहारे चारु चिबुक दि-ठौना है ॥ ७४ ॥

सोभन सिंगार रस की सी छीट सोहै फोंक काम सर की सी कढ़ो भुगतनि जोरि जोरि । राहु कैसो र-हन रह्यो है सुभि चन्द्र माहिं तमी को सोहाग किधौं हारो तन तोरि तोरि । चतुर बिहारी जू के चित सो चिहुटि रह्यो चितये तें केसोदास लेत चित चोरि चोरि । ललना चिबुक तिल तेरे पर मेरी सखी वारों कारि तरुनी तिलोत्तमा सी कोरि कोरि । ७५ ॥

सवैया ।

काहू कली की गुलाब कली पर भौंर को चेटुवा आनि पर्‍यो है। सोन लता पै जवाहिरी मैन मनो नग नीलम चारु जर्‍यो है ॥ प्यारी के ठोढ़ी बिराजि रह्यो तिल देखि बिचार यहै मैं कर्‍यो है। भौंहैं बनावत मानो बिरंचि के लेखनी तें मसि बिन्दु झर्‍यो है । ७६ ॥

आरसी अंकुर नोक सिंगार की बीच रही परकार निसानी। कै बिरहीन के हाय को दाग पर्‍यो बक नील-कनी अनुमानी ॥ बीज के कुन्द में है छल छन्द कलिन्दजा बुन्द लसै हरसानी। नेह मई तिल ठोढ़ी के गाड़ में पेरि दई मनो प्रेम की बानी ॥ ७७ ॥

प्यारी के ठोढ़ी को बिन्दु दिनेश किधौं बिसराम गोबिन्द के जी को। चारु चुभ्यो कनिका मनिनील को कैधौं जमाव जम्यो रजनी को ॥ कैधौं अनंग सिंगार को रंग लिख्यो वर मंत्र वसीकर पी को। फूले सरोज मैं भौंरी बसी किधौं फूल ससी में लग्यो अरसी को ॥ ७८ ॥

दोहा ।

गोरे मुख पै तिल बसत मैं जान्यौं यह हेत ।
रूप खजाने को मनो हबसी चौकी देत ॥ ७९ ॥
चिबुक कूप रसरी अलक तिल सुचरस दृग बैल ।
बारी बारि सिंगार की सींचत मनमथ छैल ॥ ८० ॥

अधर वर्णन ।

अमल अवन अरविन्द बिम्ब आभा देत सहज सुवास रीझे माधुरी अमर है । सोति को तिवारी पिय अति मतवारी होत पूजे तब बारी सो संवारी सोभा धर है । मनिकंठ सुच्छम सुरेख है बँधूक फूल बसमी के चिन्ह पिय लोचन डगर हैं । कैधों लीक सी सुगति होने विधु लोक वाला सुन्दरी सुलोचनी के सोभित अधर हैं । ८१ ॥

जाकी मधुराई लै सुधाई सुरलोक कपी जब को छिप्यो है री पियूष अधरनि में । देखतहीं विद्रुम भये हैं जड़ रूप अब बिम्ब मतिहीन भये जिनके डरनि में । पान अंग पानरो भयो है तबही तें पेखि एरी ब्रजनारी अब रहैं को सरनि में । सूरति सुक तिनैं सके को बरनि प्यारी तेरे अधरन की न उपमा धरनि में । ८२ ।

दोहा ।

निरखत चखत रसलीन जब तुव अधरन की बान ।
लेखनि की निनि जीभ बंधि मधुराई तें जात ॥ ८३ ॥
जो भा अधरन तरनि वै सोभा धरत न कोय ।
याही विधि इनको पर्यो नाम अधर विधि जोय । ८४ ।
तेस दुतिया दुहुन मिलि एक रूप निज ठानि ।
ओर सांझ गहि पहनई भये अधर तुव आनि । ८५ ।
लाल बाल के अधर छिन लाल बात जनि चाख ।
लाल बात सुनि स्रुति सुकुत करत बात मैं लाख । ८६ ।

दसन वर्णन ।

सुच्छम सुबेष सुधी सुमन बतीसी मानो लच्छन बतीसहू की मूरति बिसेखिये । राती है रतीक दुचि सेत सब कैधौं ससि मण्डल में सुरन की सभा अवरेखिये ॥ कैधौं पिय जुगति अखडता के खंडिवे को खंडन के केसव तरक कुल लेखिये । दीनी दूनी कला विधि तेरे सुखचन्द को सुन्यायही प्रकासचन्द मन्ददुति देखिये ॥८७॥

कैधौं सातो मंडल के मंडन मयक मध्य बीजुरी के बीज सुधा सींचि के उगाये हैं । कैधौं अलबेली के चमेली की चमक चोक कैधौं कीर कमल में दाड़िम दुराये हैं ॥ कैधौं मुकुताहल महावर में राखे रंगि कैधौं मनिमुकर में सुवर मोढाये हैं । केसोदास प्यारी के बदन में रदन छवि सोरह कला को काटि बत्तिस बनाये हैं ॥ ८८ ॥

कैधौं मित्र मित्र में बसाई हैं किरनि तातें फूलोई रहत अनुमान यह आयो है । कैधौं ससिमंडल में झांई उडु मंडल की कैधौं हासरस निज नगर बसायो है ॥ दसन की पांति कुन्द कलिन की भांति आको सोहति है कांति गुन कोविदन गायो है ॥ मानहुं विरंचि तेरी बानी को चतुर रानी दांतर के मोतिन को हार पहिरायो है ॥ ८९ ॥

फूली फूलवारी रही उपमा न जात कही कहा धौं

सराहौं तातें जोति अधिकानी है । आसम कहत है री मोतिन की पांति खरी हीरन की कांति छबि देखि के लजानी है । दाड़िम दरकि गए इनके सम न भए रबि के किरन कैसी चमक बखानी है । तनिक हँसन में दसन ऐसे देखियत दीपत नछत्र मानो दामिनी दुरानी है ।८०।

कैधौं मुकताफल हैं कहल के आबदार जावक रंगाए अरबिन्द मुख भरे हैं । कैधौं लाल बिद्रुम अमोल मनि मानिक के दामन जवाहिरी छवा ये खोलि धरे हैं । दाड़िम के बीच कैधौं सुधा में सिराए हंस सुन्दर सुधा कर के मंदिर में भरे हैं । राधे की बदन कैधौं काम के सदन माझ जड़िया मदन ले जवाहिर से जरे हैं । ८१ ।

कैधौं कुन्द कलिका की अवली अनूप रूप बानी की बिपंच की सुधार धरी सार है । ससि के सदन ससि सिसु आये प्रिय लाल कैधौं सुख बालिक की बार बर ज्वार है । झलकत रुचिर बतीस बज्र बलभद्र चमकत चारु बिजुरी की अनुहार है । अमृत के कुण्डन पे अलि को बिमल मन कैधौं ये रदन चन्द बदन मझार है ।८२।

सवैया ।

को बरनै उपमा कबिरंग सुतोषी में है गुन जोर ब-सीके । जा दिन तें दरसो मुसुकात सुकान्ह भये बस तेरे हँसीके । चन्द से आनन पै तिल राजत ऐसे बिराजत

दांत मिसी के । फूलन की फुलवारिन में मनो खेलत हैं लरिका हबसी के । ८१ ।

बारिज में बिलसै अलिपांति किधौं अलि अच्छर मंत्र बसी के । मैन महीप सिंगारपुरी निज बांह बसाई है मध्य ससी के । आनद सों दरसी दसनावलि स्याम मिसी मिलि ऐसी लसी के । फूलन की फुलवारिन में मनो खेलत हैं लरिका हबसी के । ८२ ।

दोहा ।

मोल लेन को जगत जिय बिधि जौहरी प्रवीन ।
राखे बिद्रुम के डबा लै द्विज मुकुत नवीन । ८४ ।
दसन झलक में अरुनता लखि आवत मन मांह ।
परी रदन पै आय के अधर रंग की छांह । ८५ ।
स्याम दसन अधरान मधि सोहत हैं इहि भांति ।
कमल बीच बैठी मनो अलि छौनन की पांति ।८६।

रसना बर्णन ।

गूढ़ गुन गन के प्रकास के करन हारी झूठ सांच कहै देति सब के मनन की । नाद बेद भेद के उचारि देत आखरनि कोमल रसाल जात बसुधा के बस की । भरी सुकवि प्रिय मन को हरनहारी सुधा सों सुधारी जानी गान हारी जस की । रसना की उपमा न होत कोटि रसना तें मन की कसौटी के कसौटी पटरस की ।

कमल बदन मांझ कमला के काज छबि राखी है कमल दल तलप संवारी है । कैधों बलभद्र खट तंमन की लेखी चहै कैधों पट छादन को परखनहारी है । ललित तमोर रंगगुन की कसौटी मानो कंचन की मूरि परमारथ की थारी है। रसिक रसीली प्यारी तेरी मृदु-रसना कै पदपद हरन की रसानंद कारी है ॥ ९७ ॥

बानी बर्णन ।

सुधा के समुद्र की लहर सी कढ़त रहै याही को सुनाय लाल कीने तै अधीन है । बन उपबन बैठि आप को दुरावै याते मेरे जान यहै कलकंठी कंठ हीन है । बलदेव ऐसी ना रची है ना रचैगी बिधि मीतिन की उपमा करन लागी छीन है । कमल के कोष पैठि गुंजरत भौंरे कैधों बानी मांझ बानी जू बजायी आनि बीन है ॥ ९८ ॥

सहज झरोखा मांझ बोलत रसीले तेरे सुधा कैसी धार धौराहर में धसति है । नीचे खरे सुनत प्रबीन लोग बीन जानि कहत गवैले यहां कोकिल बसति है ॥ कालिदास मुखतें बरन मुकताहल से निसरत जबै रसरंग बरसति है । ऐरी मेरी रानी हरि जू के मन मोहिबे को नेह की निसानी तेरी बानी बिलसति है ॥ ९९ ॥

जाके एक अंश हंसबाहिनी प्रसंसति है किन्नरी सु

कौन जाकी नाहीं सरि करिहै । और कोकिला सो को-कलाहू एक जाने नाहिं सूरति सुकवि गनती में कौन धरि है । बीना बेनु तबलो बजाय लीजै प्यारी लाल फेरि तुमै उनहूं की परवा बिसरि है । सुधि बुधि सकल बिराय जैहै जानो यह जबै मेरी रानी जू की बानी कान परिहै ॥ १०० ॥

ऐसो नीको बोलिबो सिखायो सखी कौने याहि सीखबे को होत सरसुतीहू की मति है । कुबरी कुहुक सब हीतें सरकस पिक पक्यो करकस करकस हूलति है ॥ केकी कोक कलरव लागति बिकल रव अलि अलखोहैं धुनि सुनि भए अति है । एरी मेरी रानी रीझ मोहि दधिदानी तेरे बानी आगे बीना हूं कमीना सी लगति है ॥

काम की दोहाई कि सोहाई सखी माधुरी कि इन्दिरा के मंदिर में झांई उपजत है । सुरन की सुरी कैधौं मोदहू की सोदरी कि चातुरी की मातु ऐसी बातन सजति है ॥ राग राजधानी अनुरागन की ठकुरानी मोहि दधिदानी केसो कोकिला लजति है । एरी मेरी ब्रजरानी तेरी मरवानी किधौं बानी हीं की बीन सुख मुख में बजति है ॥ १०२ ॥

मुखराग वर्णन ।

केसोदास राग रागिनीन को सुअंगराग कैधौं हिय

सेवत हैं संध्या भली भोर की। अधर रदन बहु रतन की खानि कैधौं तिनकी झलक झलकनि चहुंओर की। कैधौं रेखा भूषन के मनिन के चाक चक्र ओर लेत चित चाख तेरे चितचोर की। लागि रह्यो अनुराग कैधौं पिय बैनन को कैधौं रुचि राची तेरे तरुनी तमोर की॥

कैधौं कमला के गेह कमल की लाल माल दिवाकर ताकी ताकी झलकत रंग है। कैधौं अनुराग रह्यो फैल बानी रानी जू को जब काहू काहू प्रति करत प्रसंग है। कैधौं आली तेरे लाल ओठन की लाली छाई मनभाई मेरे बनमाली जू के संग है। मोहन अनंग कैधौं सोभा की सुभग अंग कैधौं प्यारी तेरे मुख पानको सुरंग है॥

कैधो अनुराग राग राजस को रूप निज कैधौं प्रान पंकज पराग द्विज न्हाए हैं। तन तरुनाई की अरुनता उदोत कैधौं श्री के गेह सिरीखंड कुसुम बिछाए हैं॥ सोभाही तें सोभियत देखि मन मोहियत तीनौं लोक नारिन निरखि नैन नाए हैं। तिय तेरे कृष्ण तमोल रुचिराची कैधौं बलभद्र बानी को बसन पहिराये हैं १०५

मुखवास वर्णन।

कैधौं भयो उदित अनंग जू को अंग उर सुरभित अंग राग हार्हैं देह दुखको। कैधौं चित चातुरी अमेली चाव

फूलि रही फैलते आस केसव प्रकास कर सुखको । कैधौं बहिमक प्रेम पूरनावतंस को कैधौं बरसानी बनमाली के अनुख को । कैधौं पाय प्रन पति हृदय कमल फूल्यो ताको गंध बंधु कै सुगंध सुख मुख को । १०६ ॥

पूरि परिमल मलयाचल उरोजन को निज निरधारी है कमल पद्पानि को । पुनि २ लपत है गंध फली नासिका को अधिक अमोद रद कुंद कलि कान को ॥ धूपवे अनूप आवै बोलें ते बदन बास बलभद्र दई तें म-धुप सुख दानि को । सौंधे भीजी भारती गुलाब से प्रसेद कन तेरो मुख दीपत सुगंधनि की खानि को ॥ १०७ ।

याही मुख बास कमलनि की प्रतीत देत याही मुख बास केतकी सो मधुमत्त है । याही मुखवास वेलि मा-लती को मारै मान याही मुखवास कामी होत जन संत है । याही मुख बासन नवेली तन वेली फूली याही मुख बास अंग सोहति अनत है । तेरे मुख बासही सों सकल सुवास भयो बारहो महीना भौंर मानत बसंत है ॥१०८।

दोहा ।

अगर अतर के नगर में कहूं रही नहिं चाह ।
नगर २ सब डगर में तुव मुख बास प्रवाह ॥१०९॥
नथ मुकतन के झलक में मो मन लख्यो प्रकास ।
करत नाकवासी सुकृत पासु तिया मुखवास ॥११०।

मुसक्यान वर्णन—कवित्त ।

गुन गुलकंद के सुमंद करि दाखन को देखोरी दुचंद कलाकंद की कमाई सी । कहै पद्माकर त्यों साहिवी सुधाकी सबै वृज वसुधा में तैं कहा धों परी पाई सी ॥ खरक खरी की मधुहू की माधुरी की सुभ सरदा सिवी की मिसरी की लूट ल्याई सी । सांवरी सलोनी के सलोने अधरान में सुमंद मुसकान भरी मंजुल मिठाई सी ॥१११॥

रसना ललित कलवानी जूको आसन है दसन ल सन कौन सकत वखानि है । कालिदास लाल अधरन पर वारों लाल ललन अमोल मृदु बोलन की वानि है ॥ सुघर गोविन्द के रिझायवे को इन्दुमुखी रची एक रचना अनंग विधि आनि है । कैसी मुख माहँ खुली सुखमा की खानि जहां महामोह मई निरमई मुसकानि है ॥ ११२॥

सिव सिर गंग जैसे जल की तरंग जैसे उड़गन अंग जैसे करत पयान है । मोतिन की माल जैसे दामिन की धार जैसे ओपी तरवार जैसे तजत मियान है ॥ दीपक की माल जैसे पावक की ज्वाल जैसे मोहिवे को बाल मन निपट सयान है । तार जरजरी जैसे फूल झरझरी जैसे जुगुनू ज्यों जरी तैसे तेरी मुसकान है । ११३ ॥

मदन महीपति की कैधों जय कीरति है कैधों पिय प्रेम तरु अंकुर की सींचिका । कैधों मुखचन्द्र चारु चंद्रिका

प्रकाशमान कैधौं रूप कुंडल के रसकी दलीपिका। कैधौं अति चारु सुधारस के सरोवर की जोबन समीर के परस मृदु वीचिका। भारती बेसन सुख रास बिलसन मुखराजै मंद हसन सु दसन मरीचिका ॥ ११४ ॥

हास वर्णन।

कोकनद कली जैसे खिलत बयारि लागे मंद मुसकान उसकान है चमेली की॥ आरसी में भानु के प्रकाश को उजास होत जैसे दीप माल दीपै दीपति हवेली की॥ भरमी सुकवि दुति दामिनि सी कौंधति है चांदनी सी चहूं ओर बातमें सहेली की। चंदकी चमक चकचौंधति दसन दुति पियमन बसन हसन अलबेली की ॥ ११५ ॥

कोमल कमल कोस कमला बसन ताके भूखन की जोति कैधौं जगत प्रकासी है। कैधो चपला के चखचौंधनी को दयानिधि कीनी तुव नैनन जुगति अति खासी है ॥ कैधौं मधि मोहिनी के मोहिवे को मोहमई चतुर बिरंचि मई चातुरी निकासी है। काम की सुधासी चल चितन की फांसी कैधौं एरी प्रानप्यारी या मधुर तुव हासी है ॥ ११६ ॥

दोहा।

ललन कपट सौतिन गरब हास कियो सब नास।
चंदहास सम भासई चंदमुखी को हास ॥ ११७ ॥

दंत कथा वा दसन की ओर कही नहिं जात ।
फूल झरीसी छूटत जब हंसि २ बोलत बात ॥११८॥

कपोल वर्णन—कवित्त ।

चपला के ऐसे चारु चमकै हैं छवि पुंज छेदि निसरत झीने घूंघट निचोल हैं । कालिदास पास पास तरल तरौनन की जोति किरनावली ललित अति लोल हैं । कान्ह अवलोकत बदन प्रतिबिम्बित कनक सरूप मानो मुकुर अमोल हैं । लेत मन मोल कहैं दृगन की तोल ऐसे गोरे २ गोल बने प्यारी के कपोल हैं ॥ ११९ ॥

कैधौं नैन नटुवा कि नाचिवेकी रंग भूमि सोभा गृह आंगन अनंग अंग लोल हैं । कैधौं है अनंग अंग बेलि के बिमल दल ऐसे सुख देत दुति अमल अमोल हैं ॥ पिय मन मानके अखारे कैधौं मीनके उदारे जिन ऊपर मुकुर गोरे गोल हैं । कैधौं बोलसुखी मोद मंच तें कलित औन भूषन फलित तेरे ललित कपोल हैं ॥ १२० ॥

केसर कपूर कांत कीन्हे दुतिमंद अति आनंद के कंद होत चंदहूं तें अंग है । अमल कमल दलहू ते अति कोमल जे ताके बीच २ इन्दु गोप कैसे रंग है । प्रेम सौं रहत नित पुलकित मुलकित झलकत छलकत छविद्युति संग है । गोरी तेरे लोल २ ललित कपोल तामें लाल सेत पीत बहुरंग के तरंग हैं ॥ १२१ ॥

कैधौं रूप धरती में राजत जुगल खंड कैधौं मीनके-
तन की आरसी सुढ़ारि हैं। कैधौं हरि लोचन तुरंगन की
लीला थल कैधौं सरसीरुह के दल द्वै निहारे हैं। परसराम
कोमल मखमल से चंपक से चारु चन्द्र चन्द्रमा की कोटि
के निकारे हैं। प्यारी गोल २ अति ललित कपोल तेरे
नीर २ रचिकै विधाता मार झारे हैं। १२२।

कपोल तिल वर्णन।

बदन सरोरुह के संगहीं जनम जाको अंजन सुरंग
सम जान परसत है। मधु रूखे मुनिन को मन चिकनाय
जाय सेनापति पाई जब नेक दरसत है। रूप सरसावै
औ रसिक मन भावै मीठो नेह उपजावै पै न पाप वि-
लसत है। आली बनमाली मन फूलमें बसायो तेरे तिल
है कपोल सों अमोल बिलसत है। १२३।

फूले वारिजात में लखात हैं मधुप कैधौं सुखमा स-
रोवर में रसराज पैठो है। रतिके मुकुट पै धरी है नील
मनि कैधौं कामनी के वदन परम छवि जैठो है। श्रीपति
रसिकराज सुन्दर गुलाब बीच मृग मद बिन्दु रूप परम
परैठो है। ललित कपोलन में तिल छवि देत मानो पू-
रन मयंक में निसंक सनि बैठो है। १२४।

कैधौं रूपरासि में सिंगार रस अंकुरित अंकुरित

कैधौं तम तड़ित जुन्हाई में। कहै पद्माकर किधौं यों काम कारीगर मुकता कियो है हेम फरद सुहाई में। कैधो अरविन्द में अलिन्द सुत सोयो आनि कैधौं तिल सो हत कपोल की लुनाई में। कैधौं परो इन्दु में कलिन्दी जल बिन्दु कैधौं गरक गोविन्दभयो गोरी की गोराई में।

कपोल गाड़ वर्णन।

भँवर परत जल जोबन के ओर कैधौं जामे छवि बूड़त सकल प्रेम दान की। निकसि सके न बल कर हारे बलभद्र नैन नाग नाथिबे को ओंदी विधि बानकी। उदित नवीन छोत रचित भरत मानो रूप को निवास कैधौं कुंडी सुख दान की। पिय मन पारद अटकिबे की गाड़ कैधौं गाड़ गंडमंडलनि मंद मुसकान की॥ १२६॥

श्रवण वर्णन।

पिय गुन आसन सरोज के सिंहासन हैं कैधौं विधि बासन सनेह रस भरे हैं। सांच झूठ तौलिबे को तुला के पला हैं कैधौं किंसुक के पात से लपटि पाछे परे हैं। कैधौं विधि चक्र सब चक्र के सुधारे कैधौं कुंडल कला की निधि विधि करि धरे हैं। बरन के छिद्र के अछिद्र छवि ताये कवि कंचन की सीप मानो मुकता सों गरे हैं॥१२७॥

जटित जराय जगमगत सहस कर बलिभद्र रूप की कंवार काके भान है। भरत निभार है अपार खत नैनन

के तीरचा अनंग बान रोप्यों खरसान है । उपमा अनंत मनरंजन बिलासी रती तांडव के तार जिन्हें जानत सुजान हैं । चंद रथ चरन की काम चक्रवै के चक्र कैधौं तिय तरल तरौना तेरे कान हैं । १२८ ।

कैधौं सुर पंडित असुर गुरु दोउ छिति ससि के श्रवन लागि मंत्र मतकात है । कैधौं कल्पद्रुम के सुमन अमेट आभा सुन्दर कपोल पर कला कतरात है । कैधौं रवि छील सुधाबुन्द द्वै जमाए कैधौं कवि के कमल कैधौं नवल सोहात है । कैधौं मनभावन की साखी लै करन राखी प्यारी के करनफूल कीनो मन मात है ॥ १२९ ॥

कानन में कुन्दन के नगन जटित सोहै अंबर छपाए बहु तोल महा गथ के । कालिदास ललित कपोलन के जोग लसै कैसे बरनत घनश्याम सहु जथ के । पाछे परे राहु तातें छपे हैं कुरंग दृग अनुमान होत हिये अनुमान पथ के । छवि आई आननि में कानन तरौना वाके सोहत सोहाए मनो चाक चन्द रथ के ॥ १३० ॥

नासिका वर्णन ।

केसव सुगन्ध स्वास सिद्धन की गुफा कैधौं परम प्रसिद्ध सुभ सोभन सुबासिका । कैधौं मनमथ मन मीन की कुबेनी कैधौं कुन्दन की सींव सील सोधन बिलासिका । मुकुता मनिन की है मुकुतपुरी सी कोधौं कैधौं

सुर सेवत हैं जासी की प्रकाशिका । त्रिभुवन रूप ताको तुंग तोय निधि ताके तोय की तरंग कै तरुनि तेरी नासिका ॥ १३१ ॥

सोभा को सकेलि ऊंची बेलि बांधी बलभद्र राख्यो सम लोचन कुरंगन को रोस है । दीपति को दीप सुख दीप को सुमेरु यह मृदु सुख सारस को सिफा कन्द कोस है ॥ कलप तरोवर की कलिका सुगंध फूली उपमा अनूपम की बिविध निसोस है । तिल को सुमन है कै नासिका तरुनि तेरी सुरन की सरन कै सौरभ को कोस है।

नासिका वेध वर्णन ।

सोभा सुख सदन को बातायन बलभद्र मानो महा मोहनी पपीलका को गेह है । मैन पंचबान को छबीलो छिद्र छाजत है देखिबे को देंह में बदेह जू को देह है ॥ पिय मन रोकिबे को निडर किली को रंध्र सुखमा मधुर को रुचिर जासो नेह है । मैन के मवास में धनुर्धर को मोर चाहै कैधों बाम नासिका में बेसर को बेह है १३२

सुनि चित चहै जाके कंचन की झनकार करत है सोई बात होत जो बिदेह की । सेख भनै आज है सुकालि नाहीं कान्ह जैसी निकसी है राधे की निकाई काहू नेह की । फूल की सी आभा सब सोभा लै सकेलि

धरी फूलि ऐसो लाल भूलि जैसो सुधि गेह की। कोटि कवि पचै तऊ बरनी बनै न फबि बेसर उतारै छबि बेसर के बेह की ॥ १२४ ॥

नासिका भूषण वर्णन।

कोऊ कहै नाक हांसी कोऊ मनमथ फांसी कोऊ कहै देवमाया चक्र सो बनायो है। मुकुता अनूपलाल चूनी छबि रूप नथ कंचन को तार कैधों सुघर गढ़ायो है। दीपजीत सुकजीत चंपक कली को जीत नासिका विजय जय कबि पै पढ़ायो है। सील को सुजस तीन लोक को सोहाग निज नेत में पिरोय मैन भूखन दिखायो है। १२५ ॥

कैधों पिय नेह मनि कीरति हँसन कैके भूले हेम भूले भूले ध्यान समरथ के। कैधों मीन मन खग फन्दा तामै मिच बस बैठि कवि कुज सोम थापे मनमथ के। ऐसी भांति देखि एरी मोहै मनमोहन जू सूरति बखान करों कहा लों चकथ के। भूले ज्ञान गथ के भौ लोक लाज पथ के सो कौन नैन न थके निहारे तेरे नथ के।

नथ मोती वर्णन।

बदन सुराही में छबीली छबि छाको मद चपर पियाले छिन २ में गहत है। चलसाय पीढ़त कपोल पर

जंक पर कबहूं गजब आदि चक्षुन चहत है । प्रेम मम सखी मतो सदा रहै अंक भरे झकोर रहत कोउ काहू ना कहत है । झुकि परै बात के झकोरे तें अनखात प्यारो बेसर को मोती मतवारोई रहत है ॥ १२७ ॥

छाड्यो जल सागर बिधायो तन आय आय अधर के बीच रह्यो और ना चहत है । बिधि के संजोग बस आनि घर खोए घर बन्यो है बनाव मनि कंचन सहित है ॥ पूरब प्रताप चन्द पायो है मुखारबिन्द एतो कहा कहै कन्त जेतो तू लहत है । प्यारी के बदन पै मदन जू को मद पिये मोती मतवारो सदा झूमत रहत है ॥ १२८ ॥

लोचन वर्णन ।

पिय मन दूत कैधौं प्रेम रथ सूत कैधौं भँवर अभूत मधु मास के सुरंग है । चितवत चहूं ओर पीतम के चित्त चोर चन्द के चकोर किधौं केसव कुरंग है । बात मद भंजन हैं खोकिवे के खंजन कि रंजन कुंवर कामदेव के तुरंग है । सोभा सर मीन मीन कुवल परस भीन मलिन मलीन किधौं नैन बहु रंग है ॥ १२९ ॥

दीरघ दरारे तहां कोरे रतनारे कारी कारे तहां तारे अति भारे जे सुरंग हैं । कहै गुनि गंग जनु दूध ही सो धोए पुनि कोए बिकसत सित असित कुरंग हैं । पारद

बरस चार चिर से चिरकि जात तिर में चलत मानो कू-दत कुरंग हैं। खैंचे ना रहत अनुराग डूं के बाग बर मानिनी के नैन कैधौं मैन कै कुरंग हैं। १४०।

मृग कैसे मीन कैसे खंजन प्रवीन कैसे अंजन सहित सित असित असद से। चर से चकोर से कि चोखे खांड़ कोर से कि मदन मरोर से कि माते राते मद से। नवी कवि मैना से कि और नैना वैना से कि सी पढ़े सलोना मध्य राखे मृगमद से। पद्य से पयोध से कि और सोधे सोध से कि कारे भौंर कैसे अनियारे कोकनद से १४१

झूमत झुकत भरे मद के अरुन नैन मानो मैन तून है कढ़त जातें सर है। हाव किल किंचित सरूप धरे नाथ कैधौं मोहन बसीकरन उचाट के अमर है॥ कैधौं मीन पैरत सहाव के सरोवर में मानिक जटित भूमि खंजन सुठर है। कैधौं अनुराग को लपेटि के सिंगार बैठ्यो कैधौं कोल पाखुरी में डोलत भँवर है॥ १४२॥

मीन ह्वै कमीने परे पानी में निहारि हारि हारि कै चकोर ते वे चुनत अंगारे हैं। भनत कविन्द अलि कं-जन के खंजन के गंजन गरब गारि हारे ते निहारे हैं। डोरे रतनारे कारे तारे और सारे सेत उपमा सितासित तरंगन तें भारे हैं। प्यारी तेरे मान के दृगन पर साम वारे कैवर कसीसे से कमान वारे वारे हैं। १४३।

पानिप के पानिप सुघरताई के सदन सोभा के समुद्र सावधान मान मौज के । लाजन के बोहित पुरोहित प्रमोदन के नेह के नकीब चक्रवर्ती चित चोज के ॥ दया के दिवान पतिव्रत के प्रधान जुग नैन ये मुबारक विधान नव रोज के । सफरी के सिरताज मृगनके महाराज साहिब सरोज के मोसाहिब मनोज के ॥ १४४ ॥

पाटल नयन कोकनद कैसे दल दोऊ बलभद्र बासर उन नींदी देखी बाल मै । सोभा के समुद्र माझ आभा बड़वानल की देव धुनि भारती मिली है पुन्य काल मे ॥ काम कह वर्त कैधौं नासिका उड़प बैठो खेलत सिकार तरुनीके रूप ताल में । लोचन सितासित में लोहित लकीर मानो बांधे जुग मीन लाल रेसम के जाल में ॥ १४५ ॥

कैधौं रूप सागर में आंच बड़वानल की बिरह बिसाल ज्वाल जा मधि बिकासी है । कैधौं दल पंकज के ऊपर अरुन रेखें कैधौं नेह दीपक की अरुन सिखासी है गोरी तेरे नैनन के बीच लाल रेखें तेती रेखें अनुरागकी की प्रगट प्रकासी है ॥ कैधौं पनियारे अति कारे बटपारे दृग तारन की फांसी पिय जिय कै निकासी है ॥१४६॥

हरिन निहार थकि रहे हिये हारि मानि बारिचर बारिज की बानक बिकासी है । छाती छोति तिया प-

छतातो कर छाती है है और मनरंजन के खंजन जमाती है। ऐसे को समान उपमान पाय दृगन की कबिन के मन की उकति अधिकाती है। प्यारी के पर्नोखे अनियारे ईछनन छ्वै छ्वै तीछन कटाच्छन तें कटि २ जाती है॥ १४७॥

सिपर सुपूतरी अपान कल कज्जल त्यों दल बरुनीन वे छबीले छैल छाजे हैं। कहै पद्माकर न जानी जाति कौन पैथौं भौंहन के धनुख चितौन सर साजे हैं। घेरदार घूघट घटा के छांहगीर तरे मदन वजीर के लियेई मंजु माजे हैं। बखत बुलन्द मुखचन्द के तखत पर चारु चख चंचल चकत्ता ह्वै बिराजे हैं॥ १४८॥

भारे कजरारे दोउ काजर से लाल डोरे सेंदुर सों चीते अति राजत सुपथ के। मान कवि कहै पाय बरुनी अनीर डारि करत कटाच्छ गति डोल झूल नथ के॥ पूतरी महावत विराजे आड़ नासिका सों पीतम के प्यारे हैं लिवैया जग गथ के॥ मोहन के मोहन हैं सोहैं तीखे लरिबे को नैना तेरे दोउ हाथी माते मनमथ के ॥१४९॥

जोबन प्रवाह तामें छबि की तरंगे उठैं भौंह की मरोरन सो भौंर मतवारे हैं। बालम की मूरति मलाह लाज बैठ रही छूटे लाल डोरे तेई गुन रतनारे हैं। पूतरी हलन तेई पतवारी जधीराम लाज बादबान चंपू

बरुनी सवारे हैं। रूप के सरोवर में तीर तीर डोलत है अखिया न होय ऐसी काम के नवारे हैं ॥ १५० ॥

कैधौं रूप सागर के रतन जुगल कैधौं भूप मीन के-तन के केतन सुजस के। नेह भरे सदन सदन के प्रदीप कैधौं रसराज चाखिवे को चखक सरस के ॥ सुनत सु-देस के सुवेस से महीप कैधौं बस कीने काज इन्दिरीन विसि दस के। लगे हिय ऐनक सकत दिन रैन कैधौं प्यारी तेरे नैनतीर मैन तरकस के ॥ १५१ ॥

ऐसे नैन मैन के न देखे ऐन सैन के जगैया दिनरैन के जितैया सौति सीन के। कमल कुलीनन के मुकुली करनहार कानन की कोरन लौं कोरन रंगीन के ॥ भ-नत कविन्द भावती के नैन पायक से देखे मैन पायक से नायक नवीन के। सींचे हैं अमीन के असीन मानो मीन के बखाने को मृगीन के खगीन पन्नगीन के ॥ १५२ ॥

जबी सी रहति अरबिन्दन की आभा महबूबी मृग छौनन की छाम करियतु है। दूबी बन बीथिन चकोर चाहताई मन सूबी तुरगन की तमाम करियत है! डूबी जल जोरन सो मीन बरजोरी सोभ भौंर मगरूरी बदनाम करियत है। देखि देखि तेरी अंखियान की अजूबी प्यारी खूबी खंजरीटन की खाम करियतु है। १५३ ॥

प्रेम रगमगी जग मगी जागी जामिनी के जोबन की

जोति जगि जोर उमगत हैं। मदन के माते मतवारे ऐसे घूमत हैं झूमत झुकत झपि १ उघरत हैं। चाहत हैं उड़िबे को देखत मयंकमुख जानत हैं रैनि तातें ताही में रहत हैं। कहै कवि आलम निकाई इन नैनन की पांखुरी पदुम पै भवर बिरजत हैं॥ १५४॥

सुखमा मलिन्द के भलिंग अरविन्द हैं कविन्द हैं नरिन्द के लगी हैं वर जस के। श्रीपति प्रवीन रूपसर के ललित मीन हरिन नवीन नेह कानन सरस के॥ एरी मेरी प्रानप्यारी लोचन तिहारे प्यारे सुरज सुखारे पिय बिरह तमस के। रति रनबीर हैं सिंगार गुनधीर हैं संवारे पाके तीर हैं मदन तरकस के॥ १५५॥

दोहा।

अमी हलाहल मद भरे सेत स्याम रतनार।
जियत मरत झुकि झुकि परत जिहि चितवत इक बार।
कारे कजरारे अमल पानिप ढारे ऐन।
मतवारे प्यारे चपल तुव ढुरवारे नैन॥ १५६॥
तन सुबरन के कसत यों लसत पूतरी स्याम।
मनो नगीना फटिक में जरी कसौटी काम॥ १५७॥

अंजन वर्णन कवित्त।

कैधों रस राजरस रसित असित कैधों ललित बि-

सिख विख बलित सुभाव के। कैधौं जग जीतिवे को राजा रति नाथ हाथ बाहन बनाए केसोदास चल चाल के। हत घात पातक कि चित्त चोरिवे को तम देखिवे को मंदलाल लालि करै काल के। लागि रही लोक लाज खंजन नयनि किधौं पियमन रंजन को भंजन हैं बालके॥

दोहा।

दृग तारा तकि ज्यों लख्यो दीपक जातक भाय।
जग के घातक पायके लागत पातक धाय॥१५८॥
रे मन रीति विचित्र यह तिय नैनन की चेत।
विष काजर निज खायके जिय औरन को लेत॥१६०॥
राते डोरन ते लसत चख चंचल दुहि भाय।
मनु विधि पूना पवन में खंजन बांध्यौ आय।१६१।

बरुनी वर्णन कवित्त।

कुवनहीं कोमल सिरिस की सी पांखुरी हैं छिन २ खरी खरकति जाती छाती हैं। निपट पन्यारी नेक छो-तिना छिये तें न्यारी भजी नटमाल की अनीसी इठा-ती हैं। मंडल तिलौकी असि काजर करौछी अति अंकुर सिंगार को जई की उलहाती हैं। नैन मैन तीरन की फोकसी तरेरी तीखी तरुनी की बरुनी वे बरनी न जाती हैं।१६२।

नजर परीतें उसहत उर आनद है ससत समूह सो कटाच्छन सवेद है। कालिदास लोचन पियाले भव सो· कतहीं पीतम के अंग२ परसत खेद है। दोऊ हितकारी करि मोहत मुरारी जी को छकेई रहत लखे बिरति अ- खेद है। चरन में एक गुन भेद मानो तरुनी की बरुनी में बारुनी में और कछू भेद है। १६३।

कैधों दृग सागर के आस पास स्यामताई ताही के ये अंकुर उमहि दुति बाढ़े हैं। कैधों प्रेम क्यारी जुग ताके ये अहूंवा रची नील मनि सरनि की बारि दुखहाढ़े हैं। सूरति सुकवि तरुनी की बरुनी न होवे मेरे मन आवे ये बिचार चित गाढ़े हैं। जेई जे निहारे मन तिन के पकरिवे को देखो दृग नैनन हजार हाथ काढ़े हैं।

लिख्यो मन नायक बनाव रसराज मसी कैधों महा- मोहनी के मंत्र के बरन हैं। कैधों नैन चोरन के हाथ की अनूप असी कैधों स्याम रंगन के अंगन के कन हैं। कैधों ये पचास टूक लीवन को सार सूई कैधों कारे ता- रन के किरन के गन हैं। कैधों रूप पंकज के ऊपर ये पंकरेखें कैधों नैन तरुनी के बरुनी सघन हैं। १६५।

दोहा।

कारे अनियारे खरे कटकारे के भाव।
झपकारे बरुनी करत झप २ कारे घाव॥ १६६॥

पलक वर्णन ।

यों तारे तिय दृगन के सोहत पलकन साथ ।
मनो मदन हिय सीस विधु धरे लाज के हाथ ॥ १६७ ॥

भृकुटी वर्णन कवित्त ।

कैधों लागी पंकज के अंक पंक लीक किधों केसव मयंक अंक अंकित सुभाय को । जंत्र है सोहाग को कि मंत्र अनुराग को कि मंत्रन को बीज अध उरध प्रभाय को । आसन सिंगार को कि काम को सरासन है सासन लिखो है प्रेम पूरन प्रभाय को । राख रुख वेख विख बिषम पिऊष में सुभामिनी की भौंहै किधों भौन हायभाय को ॥ १६८ ॥

जे बिन पनच बिन करकी कसीस बिन चलत इसारे यह जिनको प्रमान है । आंखिन लडूका आय उर में करत घाय परत न देखी पीर करत अमान हैं ॥ बंक अवलोकन की बानि औरई बिधान कज्जल कलित जामें जहर समान हैं । तासों बरबस बेधें मेरे चित चंचल को प्यारी तेरी भौंहें कैसी कहर कमान हैं ॥ १६९ ॥

सौरभ सुगंध स्वास चंपकली नासिका की कैधों अलि उरध तें अम्रन करत हैं । कैधों मुखचंद भयो वाहन कुरंग कांध जुवा मरकतन को मनहीं हरत हैं ॥ कैधों बल

भट्ट भाल कंचन के भाजन में दीप जुग नैनन को काजर परत हैं। भामिनी की भौहैं किधौं काम की कमान सी हैं जिन्हें देखि सौतिन के प्रान निसरत हैं ॥ १७० ॥

कैंधौं रतिनायक की कुटिल कृपान कैधौं बिरह भुजंगम के अंकुस बिमल हैं। कैधौं बाल अलिन की आवली ललित लसै रंग रस भयो पिये आनन कमल है ॥ कैधौं नैन चातक पै जनी घटा अंबुद की लाल मन कूलिबे को कैधौं कलबल हैं। कैधौं भौरी भामिनी की भृकुटी बिराजै बंक कैधौं ये सिंगार बेलिन्ही के दोऊ दल हैं ॥ १७१ ॥

अमल कमल पर गुंजत भँवर जुग प्रेम की तुलाकी सुभ डांडी जोहियत है। तनक मयंकअंक लोचन चपल रति अरध को अञ्जन की आड़ रहियत है ॥ कैधौं मनि कण्ठ हाव भाव के वकील ये हैं काम की कमान पिय मन मोहियत हैं। सोभा रस भासन सिंगार रस आसन की कैधौं मन भावती की भौंहे सोहियत हैं ॥ १७२ ॥

भाल वर्णन।

केसव असोक किधौं सुन्दर सिंगार लोक कमला के हार किधौं आनद के कंद को। सोभा को सुभाव किधौं प्रभा को प्रभाव देखि मोहे हरि राव सखि नन्दन सुनंद को ॥ चमकत चारु रवि गंगा को पुलन मानो चकचौंध

चित मति मंदरु अमंद को । वेज है सोहाग की कि भाग की सभा सुभ.ग भामिनी को भाल किधौं भाग चारु चन्द को ॥ १७३ ॥

रूप की नदी में पार पाइवे को पारो है कि काम को अखारो है कि रति को भंडार है । लाज को महल प्यारे मंडन के आंखिन के पैठिवे को पैंड़ो है कि प्रेमरस सार है ॥ राहु जानि बारन के भारन डेरानो यातें चंद्रमा को मानो अध खंड अवतार है । जोवन को द्वार कै नि- काई को निकार भोरी गोरी को लिलार कैधौं सोभा को सिंगार है ॥ १७४ ॥

वेनी भानु तखत के रूप को बखत यह संभु राज लखत भंडार काम माल को । आनद को कन्द कैधौं सरद को चन्द लसै दामिनी अमंद कै किनारो सुधा ताल को ॥ मोहिवे को जंत्र कैधौं कामरू को मंत्र विधि रच्यो है स्वतंत्र मनहरन गोपाल को । अलिही विसाल कैधौं जोतिन को जाल यह प्यारी तेरो भाल है हरैया लाल लाल को ॥ १७५ ॥

करत उचाट पाट मंत्रन को मंत्र मनो ललित लि- लाट तेरो हरत हियान है । कालिदास बिलसत सेंदुर को बिन्दु चारु सुन्दर गोबिन्द मन मोहन निधान है ॥ सोने तें सलोने भाल अलक में सुन्दरी के जगमग दियो

लै तिलक छबियान है। राहु पै चलायो है मयङ्क जम-धर सो तो रहि गयो मेरे जान उर में मियान है ॥१७६॥

थापी कैधौं जस की जनमभूमि सखिवत उपजत जहां सब सुकृत को जाल है। तिलक तरोवर की छाया सु कलप तरु रस के अगारन को अजिर रसाल है। भाग के सो बासन सोहाग कैसो आसन है मोहनी को सासन लख्यो तें बस लाल है। काम के तुरंगन की धाइ का ध-रनि यहै कैधौं बलभद्र भोरी भामिनी को भाल है॥१७७॥

भालविन्दु वर्णन।

बपु बच्छ तें लगायो भयो गुरु बंधु जानि भुव सुत भेटे तकि उड़प नरिन्दु है। कैधौं रवि सारथी कुरंग रथ सारथी भो कैधौं निज नारी उर पर धरे इन्दु है। सौतिन को गर्व दहिबे को दै दहन कन बलभद्र सबै सुख दैन दुख निन्दु है। राग पिय मन को पराग मुख पंकज को भामिनी के भाल कैधौं केसर को विन्दु है॥ १७८॥

आज मुखचन्द पर राजत रुचिर विन्दु सोई ब्रजचन्द को बिकावन सिताव को। छाजति छबीली छबि बरनि न जाय मो पै हरनी हितूजन के हिय को हिताव को। रति को न रंभा को न सची उरबसी को न वारि २ डारियत उपमा किताब की। गालिब गुलाब की न पं-कज के आब को रही न आफताब की न ताव माहताब की॥ १७९॥

सवैया ।

आज गई सिगरी मुंदरैं औ वेनी गुंथि मोतिन जोतिन जाल में । कंचन किंकिनि छाप छरा हरा हेम हमेल परी मति चाल में ॥ टौनो पर्यो कछु वैनी प्रवीन सलोनो सरूप लखे किते बाल में । इन्दु जित्यो अरविन्द जित्यो तू गोविन्द जित्यो इक बिन्दु दै भाल में ॥ १८० ॥

बाल के भाल विसाल दये मृग के मद को लसै बिन्दु सलौना । लागि न जाय कुदीठ कहूं यह हेत दियो मनो नील डिठौना ॥ भावत है विजयानन्द जू अपने मन को चहै टोतवा टोना । कंज से नैन खिले दुहूं देखि ये लालची बीच भयो अलि छौना ॥ १८१ ॥

सीतलादाग वर्णन—कवित्त ।

पूरन मयङ्क कैधौं मेटिकै कलंक बैठो अंक में समेटि कै नखत बड़ भाग है । कैधौं रंगरेज मैन बांधनू विचित्र बांध्यो कैधौं रूप सागर में झलकत झाग है ॥ कैधौं नये सोभा के बये हैं बीज रचि २ कंचन की भूमि पै जटित पुष्प राग है । नाथ अनुराग है कि फूल्यो मैन बाग है कि कीरति को सोहाग है कै सीतला को दाग है ॥१८२॥

साधि सुभ लगन मुहूरत अवधि बांधि त्रिभुवन जीतवे को चक्र उपजाये हैं । कैधौं पांत लाखन की लागी विधुमण्डल में मण्डल अखण्डल के तन मन भाये हैं ।

जोबन दिनेश के उदै में खुल्यो कंज नाल तापै मानो मोप के कनूका बिथराये हैं । मोहन बसीकर के जंत्र लिखि राखे कैधौं दाग सीतला के मुख ऊपर सोहाये हैं । १८३ ॥

कंचन बदन तेरो लागि दाग सीतला के कैधौं जैन जड़िया ने चुनी जरि धरी हैं । कोमल कपोल कैधौं स्रम के पसीजे भीजे आनद कनक कैधौं छवि छीटैं परी हैं । वारि डारौं रति बलिहारि डारौं रति पति मुख की वटा तें मानो प्रेम बुन्दें झरी हैं । छोटी छोटी मोटी तेरे मुख पै सुघर प्यारी मानो लखा लाखन नखत जोति छरी हैं ॥ १८४ ॥

भाग भरे आनन अनूप दाग सीतला के दैव अनुराग झिझिया मे झमकत हैं । नजर निगोड़िन की गड़ि गड़ि गाड़े परे आड़े करि पैन दीठ लोभ लपकत हैं । जोबन किसान मुख खेत रूप बीज बोयो बीज भरे बुन्दन अमोल दमकत हैं । बदन के बेझे पै मदन कमनैती के चोटारे सर चोटन चटा से चमकत हैं । १८५ ।

केश वर्णन ।

कोमल अमल चल चीकने चिकुर चारु चितये तें चित चकचौंधियत केसोदास । घुमडु छबीली राधा छूटे तें छुवें छपान कारे सटकारे हैं सुभाव ही सदा सुबास ;

सवैया ।

आज गई सिगरी सुंदरी वै जे रहीं गुंथि मोतिन जोतिन जाल में । कंकन किंकिनि छाप छरा छरा हेम छबील परी मति चाल में ॥ टोनो पढ्यो कछु बैनी प्रवीन सलोनो सरूप लखे किते बाल में । इन्दु जित्यो अरविन्द जित्यो तू गोबिन्द जित्यो इक बिन्दु दै भाल में ॥ १८० ॥

बाल के भाल विसाल दये मृग के मद को लसै बिन्दु सलौना । लागि न जाय कुदीठ कहूं यह हेत दियो मनो नील डिठौना ॥ भाखत है विजयानन्द जू अपने मन की यहै होतवा होना । कंज से नैन खिले दुहूं देखि ये लालची बीच पर्यो अलि छौना ॥ १८१ ॥

सीतलादाग वर्णन—कवित्त ।

पूरन मयङ्क कैधों मेटिके कलंक बैठो अंक में समेटि कै नखत बड़ भाग है । कैधों रंगरेज मैन बांधन विचित्र बांध्यो कैधों रूप सागर में झलकत झाग है ॥ कैधों नये सोभा के बये हैं बीज रचि २ कंचन की भूमि पै जटित पुष्प राग है । नाथ अनुराग है कि फूल्यो मैन बाग है कि प्रीति को सोहाग है के सीतला को दाग है ॥१८२॥

साधि सुभ लगन मुहूरत अवधि बांधि त्रिभुवन जीतवे को चक्र उपजाये हैं । कैधों पांत लाखन की लागी विधुमण्डल में मण्डल मखमण्डल वे तन मन भाये हैं ॥

जोबन दिवैया के छदे में सुखो कंज नाथ तापे मानो चोप के कनूका बिथराये हैं । मोहन बसीकर के जंत्र लिखि राखे कैधौं दाग सीतला के मुख ऊपर सोहाये हैं । १८३ ॥

कंचन बदन तेरो लागे दाग सीतला के कैधौं नैन जटिया ने चुनी जरि धरी हैं । कोमल कपोल कैधौं श्रम के पसीजे भीजे आनंद कनक कैधौं छबि छीटैं परी हैं ॥ वारि डारौं रति बलिहारि डारौं रति पति मुख की घटा तें मानो प्रेम बुन्दें झरी हैं । छोटी छोटी मोटी तेरे मुख पै सुघर प्यारी मानो लवा लाखन नखत जोति छरी हैं ॥ १८४ ॥

भाग भरे आनन अनूप दाग सीतला के ऐंव अनुराग झिझिया से झमकत हैं । नजर निगोड़िन की गड़ि गड़ि गाड़े परे आड़े करि पैन दीठ लोभ लपकत हैं । जोबन किसान मुख खेत रूप बीज बोयो बीज भरे कुन्दन कपोल दमकत हैं । बदन के बेभे पै मदन कमनैती के चोटारे सर चोटन घटा से चमकत हैं । १८५ ।

केश वर्णन ।

कोमल अमल चल चीकने चिकुर चारु चितये तें चित चकचौंधियत केसोदास । सुनहु छबीली राधा छूटे तें छुवैं छवान कारे सटकारे हैं सुभाव ही सदा सुबास ;

सुनि के प्रकास उपहास निसि बासर को कीनो है सुके-
सव सुबास जाय के अकास । यद्दपि अनेक चन्द्र साज
मोरपच्छ तज जीत्यो एक चन्द्रमुख रूप तेरे केस पास ॥

कालिन्दी की धार निरधार है अधर मन अलि के
धरत या निकाई के नरेस हैं। जीते अहिराज खंडि डारे
हैं सिखंड घन इन्द्र नील किरिन कराई ना हमेस हैं ।
एहिन लगत सेना हिय को हरख कारें देखत हरत रवि
कन्त को कलेस हैं । चीकने सघन अँधियारे तें अधिक
कारे लसत लछारे सटकारे तेरे केस हैं । १८७।

कोमल कुटिल नीलमनि के सिखर चल बिमल बि-
साल बाल चीकने न सरि के । सुन्दर उदार कच नूपुर
तें आय लागैं उतर सघन मानो सुखमा सुभरि के । जो-
हन के काज लागे गोहन गोपाल डोले सोहन दिनेस
मन मोहन हैं हरि के । भौंरन के हार मखतूल कैसे
तार देखे होत निसतार छूटे बार ये कुंवरि के ॥ १८८ ॥

कारे सटकारे फटकारे चटकारे नेक धूप दै संवारे
सुखमा समूह बसि गो । कोकिला कुहूको सोहू को
कियो मैलो मन कासीराम भौंरन को भाव नीको नसि
गो । सावन के घन बन सघन तमाल तरु तरनि तनूजा
ताहि हेरि हिये हंसि गो । तेरे तन रूप की तरंगिनी
नहनि मन पैर बार पारन सेवारन में फंसि गो ॥१८९।

ओवम सरोवर के कोमल सेवार मूल काम तनु तूल मखतूल कैसे तार हैं। पंच सर सिंधुर के स्याह चौर भौर कैधौं कैधौं सीस सहज सिंगार रस सार है। माथे मार मरकत मनि की मयूखैं कैधौं कैधौं धरे चन्द को तिमिर पर वार हैं। लामें २ जामें जोत लता के बितान कैधौं कैधौं स्याम बरन छबीली छूटे बार हैं॥ १९०॥

लामे लहकारे सटकारे सुकुमारे कारे मृगमद धारे मखतूल के से तार हैं। तमके निवास कैधौं तामस प्रकास के सिंगार के सरोवर में सुथरे सेवार हैं॥ मार सिर मौर के मुबारक ये भौंर कैधौं चातुरी के चौंर मन में चख के सार हैं। ससि के समीप कैधौं राहु की रसन सी है नागिन के बार कै सोहागिन के बार हैं॥ १९१॥

लट बर्णन।

देखे मुख चन्द दुति मन्द सी लगति अति लोचन बिलोके मृगसावक तरफ है। सोने कैसे पात गात देखत लजात जात मेनका न कही जात रूपज तरफ है॥ मोती मोर बेसर को लसे लाल ओठन पै जैसे मनि बिम्ब ढिग बुन्दन बरफ है। नेह भीनी लट वाकी लपटी कपोलन पै मानो मैन पारसी में फारसी हरफ है॥ १९२॥

निकसी कलंकित कलंक रेख हीन ह्वै के बदन ससी में दृग देखे भटकत है। कैधौं चखि बाल पांति चखि

बकी कंज ढिग अधर अमी को नागिनी सी छटकत है। पति मिलिबे को भुज भामिनी पसाचो एक सौति मिल चाह की चटक चटकत है। मैन नट नागर लकुट मनि कंठ कैधों कारी सटकारी प्यारी लट लटकत है ॥१८३॥

छोटी २ जुलफें है ओरन मरोर राखी कैधों मुख कंज में मधुप अरुझाने हैं। कैधों चन्द मण्डल पे पीवन पियूख आए नागिनि के छौना मृगमद लपटाने हैं॥ कैधों काम कुंजर के अंकुस सुभग बने भूमि के धरे हैं रतिराज पहिचाने हैं। कैधों सिसु स्याम के सिपाही दोऊ ऐन खूनी खैंच २ खंजर ये कौन पै खिमाने हैं॥

दृग मीन बाझिबे को बंसी यह सखी कैधों नागिनि की बच्ची पीवै अमृत अमन्द है। प्रेम के कपाट खोलिबे को आंकुसो है कैधों कैधों ये प्रसाद मन फांसिबे को फन्द है। रूप के जहाज बीच लंगर लग्यो है कैधों मोहनी महल पर लसत कामन्द है। चन्द की चटक पै सुराहु की सटक परी लटकि रहे हैं लट माखव पसन्द है॥

पाटी वर्णन।

कैधों बेनी पन्नगी के फन दुहूं ओर कैधों मृग दृग रोकिबे को रूप भूप पाटी है। मुख बिधु तान के बितान जुग मेरे जान कमल के ऊपर सेवारन की टाटी है। कैधों करतल रसराज राखे माथे दोऊ दीपत दि-

नैस तातें ललित लिलाटी है । एरी आगे मोहन मयूर से निरखि नाचें सघन के घन पटली की परि पाटी है॥

राति सेत फूलन की उलही ललित पांति कैधों चारु जोबन महीपति की बांटी है । कालिदास आस पास बिलसै सलोनी स्याम कैधों काम कुटिल बहेलिया की टाटी है। एरी मृगनैनी हरि मन अटकायबे को कैधों पाट पूरी बेनी घाटवी की घाटी है । प्रेम रस पाटी सोहै प्यारी तेरी पाटी कैधों चारु वर मंत्र बीज बोयबे की थाटी है॥ १८७॥

कैधों रसनायक बिहंगम के जुग पच्छ कैधों प्रति-पच्छ सौति जन के समोद के। कैधों तम पूरि है कला धर तें छप्यो आय कैधों विप्र बालक दिवाकर के गोद के॥ परसराम कैधों स्याम वेद के अनूप खंड कैधों काम भट के खेलौना मन मोद के । पाटी के बिभाग सोहै पिय के अटल भाग नीर भरे मानो चारु पटल पयोद के॥

दरस दरस को परस होत बलिभद्र कैधों है सरस सलासन सुर भान की । रसराज पच्छी कैसे उभै खंड कैसे सोहै ढाकि बैठो छपाकर मेंचक बितान की। तम के पटल लपटाने हैं मुकुट सों कि सरस कदंबिनी क-सौटी पंच बान की । पाटी तेरी तरुनी जुगल ऐसी राजै मानो आमी जुग जमुना सिखा रतन सान की॥१८८॥

मांग वर्णन ।

पहिलेही ललना नबेली अलबेली रची रचना सि-मन्त की सहेलिन को संग है । कालिदास कैसी पाटी पाटत बनी है घनी अलकैं अनूप बनी बन्दन को रंग है । देखि मन सुन्दर गोबिन्द को मगन भयो कैसी छबि छाई मन मोहनी की मंग है । लै चल्यो दुसाखा सुनि दीपक जगायवे को जोबन महीपति के आगे ह्वै अनंग है ॥ २०० ॥

तम के बिपिन मैं सरल पंथ मल्लिका को कैधौं नील-गिरि पर गंगा जू की धार है । कैधौं बनवारी बीच रा-जत रजत रेख कैधौं चन्द कीनो अन्धकार को प्रहार है। नायति सिंगार भूमि छोरी हासरस कैधौं बलभद्र की-रति की लीक सुकुमार है । पय की है सार घनसार की असार मांग अमृत की आपगा उपाई करतार है ।२०१।

दोहा ।

लाल भांग पटिया नहीं मदन जगत को मार ।
असित फरी पै लै धरी रकत भरी तरवार । २०२ ।

बेणी वर्णन—कवित्त ।

पीठ तन ताकतही दीठ तन डस लेती फेल के बिरह बिख रोम २ धावती । छिनक मैं केतिन के केतो उतपात होतो एतो कोऊ गारुड़ी कहा तें ढूंढ़ि लावतो । ईश्वर

दोहाई जो पै होती ऐसी आली तो पै कारी को गवैया कान्ह कैसे कै कहावतो । मृदु मुसकान मंद आनती न राधे तो पै बैनी के डसन हल बसन न पावतो । २०३ ।

सांवी लहकारी अति कारी सुकुमारी सखिआन नै सुधारी मत्त मधुप की सेनी है । डारत कलंकहि कला-निधि निचोरि कैधौं कैधौं मन धीरज बिदारिवे की छैनी है । नागरि सनाल मुखकंज तें लगी है कैधौं कैधौं कारी नागिनी निपट सुख देनी है । कीनो तम पान कै लमी-पति के पाछे परी कैधौं अंधकार धार कैधौं यह बैनी है ॥ २०४ ।

कंचन की सांटी पर काजर की धार मानो रूपमाल पर अलि माल लटकत है । श्रीपति भनत कैधौं केसर के खंभ पै सदंभ एक मरकत लरी चटकत है । कैधौं रति नायक के पाट पै सिंगार लीक देखि कवितान की सु मति झटकत है । कारी सटकारी बेनी पीठ पै सजत कैधौं रंगी रंग पाटी पै भुजंगी सटकत है ॥ २०५ ॥

बेनी नव बाल की बनाय गुही बलभद्र कुसुम बसन पाट मन मोहियत है । कारी सटकारी नीकी राजति नितंब नीचे पन्नग की नारिन को देह दोहियत है । सात्विक सिताई असिताई तेज तामस की राज सरताई मिलि रूप रोहियत है । धरत तिगुन वपु त्रिभुवन जीतबे को मानो महा माया को सरीर सोहियत है ॥ २०६ ॥

सामी सहकारी बहु पेचन की भारी भौं गरक सोंधें सारी न्यारी प्रतिसय झोंक की । बरनों कहाकौं ओप मदन की धोप कैधों इन्द्र करि कोप तरवारी एक ओक की । नटुषा की सांटो कैधों आसम सधापने को कहा लों बखानों ह्वौं पज्यो न विधि कोक की । नागिन कै तिमिर रूपाकार मैं छाय रही कटि पर बेनी कै निसेनी सुरलोक की ॥ २०७ ।

रैन की उनीदी राधे सोवति सकारे भये झीनो पट तानि परी पायन लों मुख तें । भीम तें उलट बेनी कंठ ह्वैके उर ह्वैके जानु ह्वै ख्वान छु्वै के लागी सूधे रुखतें । सुरति समर रति जोबन के मद्दा जोर जीति भगवन्त अरसाय राखी सुख तें । हर को हराय मानो मार मधु करन की राखी है उतारि मैन चंपा के धनुखतें ॥१०८॥

जूरा बर्णन ।

अचरज कला कलाधर धरि राखी पीछे कैधों सुर-भानजा निकार बैर कांध्यो है । कैधों अहिकारे सहकारे ते लहरदारे सुधाकर जानि के नवीन नेह नाध्यो है ॥ कैधों कंज कोस ढिग अलि पुंज गुंजत हैं मंजुल मनोज मग जानि सर साध्यो है । चीकने चिकुर चारु चहू चहे जूरो स्याम ऐंठ गैंठ लटनि लपेट मन बांध्यो है ।२०९।

कैधौं सांप पीढ़ुरी है फन उमसाय बैठो कैधौं काम आंकुस सँवारिवे को पूरा है । कंचन की गुटिका सौं पाटी पारिवे को राख्यो कैधौं सालगाम को सरूप रूप सूरा है । कैधौं सती करत तपस्या तीर कालिन्दी के हन्दा कैसो फल देखियत मन रूरा है । चीकने चटक मटकत कारे स्यामह तें ऐसो सीस प्यारी के बिराजमान जूरा है ॥ २१० ॥

सीस फूल वर्णन ।

अगर मगर होत जमुना को जल कैधौं कोकनद कमनीय पूरन प्रभनि को । सुकवि रतन कैधौं राजत रतन वर कारी कुण्डलीस फनि ऊपर फवनि को । कैधौं सुरभान परभान भोरही को कैधौं उग्यो भौमतर है तनूभव तरनि को । कैधौं प्रान प्यारी की सँवारी पारी पाटिन में सोहत सुभग सीस फूल लाल मनि को ॥ २११ ॥

अंग २ भूखन जराव के जगमगात चौकी चमकत छबि छाजै भाल गंड की । सारी जरतारी की किनारी सुकुमारि की है पसरी किरिन रवि राजत प्रचंड की ॥ भाल के तखत बैठ्यो सोहत सोहाग ताको छत्र है छबीली छटा छागी दुति दंड की । सीस फूल सीस देखि राजत दिनेस कैधौं सघन घन ऊपर उदै है मारतंड की ॥ २१२ ॥

सर्वाङ्ग वर्णन ।

चन्द कैसो भाग भाल भृगुटी कमान ऐसी मैन कैसे पैने सर नैननि बिलास है । नासिका सरोज गंध बाह से सुगंध बाह दारयो से दसन कैसो बीजुरी सो हास है । भाई ऐसी ग्रीवा भुज पान से उदर अरु पंकज से पाय गति हंस कैसे जास है। देखी है गोपाल एक गोपिका मै देवता सी सोने सो सरीर सब सौंधे कीसी बास है।२१३।

कंज से चरन देवगढ़ी से गुलुफ सुभ कदली से जंघ कटि सिंह पहुंचत है। नाभी हैं गंभीर व्याल रोमावली कुंभ कुच भुज ग्रीव भाप कैसी ठोढ़ी बिलसत है ॥ मुख-चन्द बिम्बाधर चौंका चारु सुक नाक खंज मीन नैनन बंकाई अधिकत है । भाल आधो विधु भाग करन अमृत कूप बेनी पिकबैनी जू की भूमि परसत है । २१४ ।

अहिन खिजावत हैं मृगन लरावत हैं सुकन पढ़ावत हैं नेक ना टरत हैं । कबहू कै संख पूरि संभु जू की सेवा करैं कबहूं कै कुंड बूड़ि सिंहन धरत हैं । कबहूं कै कदली के खंभ सो लपेटि जंघ कबहूं कै कंज माथे राखि बहरत हैं । जा दिन तें न्हात चार आंख भई ता दिन तें भावरी सी भांति २ भावना करत है ॥ २१५ ।

भूखन जराइन के पायन पनौट पोट कंचन अनूप रूप सांचेही की ढारी सी । घुघरू पायल पर जेहर बि-

राजै औैर छाजै छुद्र घंटिका निहारि मति हारी सी।
कंठ कंठमाल माथे बेंदी लाल लाल की है भाल की
दिनेस दुति देखे हरी तारी सी। मनिमय प्यारी नख-
सिख उजियारी निसिकारी नील सारी जगमगति
दिवारी सी। २१६।

दोहा।

मुख छबि निरखि चकोर अरु तन पानिय लखि मीन।
पद पंकज देखत भँवर होत नयन रस लीन। २१७।

अंग सुगंध वर्णन—कवित्त।

कमल बदन कर नयन चरण कुच पूरण कुरंग मद
दृगनि बिलास है। भृगुटी कुटिल कच मेचक सुगंध मई
कुंद कलिका से दंत चंदन सो हास है॥ कुंकुम सरीर
कुमकुमा नीको स्वेद नीर अम्बर को केसोदास अम्बर
बिकास है। मन के रखन बिधि कैधों इष्ट देवता अदृष्ट
गति दूतिका कि सहज सुबास है। २१८॥

फूले है न सरद सरोज इहि समै कहूं फूले है न फूल
केती सौरभ कहाते हो। चंपक चलीन मिली मालतीन
अवलीन केसर परसि पौन आयो ना तहांते हो॥ खोलो
है न घनसार खोलो न कुरंगसार सौरभ अपार पारा
वार को जहां ते हो। बलम रसिक हम जानी लपटानी
रानी आई रंगमहल तें निकल उहां ते हो॥ २१९।

जमुना के पावनजल आरन मैं आहतन जोबन की भीर लिपटे ते छवि पावे है। संतन सुकवि सुख कानि पट्टिनि लै रूप के तरंगनि पतंग दरसावे है। बाहर कढ़न कहै तोसो है मधानी कौन लेहै पट्नामी घेर घर २ छावे है। पटकी लपट लपटति ता छिना तें पाक मानो उन नलिन गुलाब छिरकावे है। २१० ।

सुकुमारता वर्णन ।

कंज दल पांवड़े पै कसकि धरति पाय जो पै कहीं थाको जात भाग पंगनाई को । ताहि तुम कहत सु कीन स्याई कुंजन मैं घरदी मैं माने डर भौंर की भवाई को । धौर गुन कढ़ि कहां लौं कहौं लाल पाके पारवे भयो है हिया मान की मोराई को। जहां २ मंजुल बदन बिकसात वाको तहां २ जान्यो जात जनम जुन्हाई को।

सोरह शृङ्गार वर्णन ।

मोतिन सों भरी मांग सीस फूल टीको दिये बेसर तरौना छवि सारी जरतारी की। मोतिन को हार माल फूल के चमेल हेम कंकन जराय छवि पारसी निहारी की। भरमी सुकवि कटि किंकिनी रसाल बाजै जेहर को पायजेब सोभा सुखकारी की। बिछिया अनौट राजै सोरह सिंगार साजै मोह्यो मन मोहन को देखि दुति प्यारी की। २११ ।

बिछिया अनौट बांके घुंघुरू जराय जरी जेहरि छ बीली छुद्र घंटिका की जालिका । मूंदरी उदार पौंची कंकन और चूरी चारु कंठ कठमाल हार पहिरे गोपा-लिका ॥ बेनी फूल सीस फूल मांग फूल कर्नफूल खुटिला तिलक नीको मोती सोहै बालिका । केसोदास नील बास जोति जगमगि रही देह धरे स्याम संग मानो दीपमालिका ॥ २२३ ॥

कैधौं यह केसव सिंगार को है सिद्धि किधौं भाग की सहेली कै सोहाग को सुहाव है । लाल २ भांतिन के पीतिहो को अभिलाख पहिरे बनाय किधौं सोभा को सुभाव है ॥ जोबन की छाया किधौं माया मन मोहिबे की माया किधौं लाज की कि लाज ही को भाव है । जरी जरकसी जगमगात सरीर कैधौं भूखन जरावही की जोति को जराव है ॥ २२४ ॥

दोहा ।

संग्रह कियो अजान यह, रस ग्रंथन लै सार ।
छमिहौ चूक सुजान पुनि, करिहौ लै परचार ॥ २२५ ॥
संवत् जुग जुग अंक महि फागुन आनन्दकन्द ।
यह मनोज की मंजरी बिकसी हेत मलिन्द ॥ २२६ ॥

इति श्री मनोजमंजर्य्यांश्चतुर्थ कलिका समाप्ता ।